प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय 4

पवित्र आत्मा

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1

ईश्वरत्व 1

प्रेरितों का विश्वास-कथन 2

संरचना 2

मरियम द्वारा यीशु का गर्भधारण 3

बाइबल पर आधार 4

नाम 4

चरित्र 5

कार्य 7

विधियां 8

व्यक्तित्व 9

चरित्र 10

भिन्नता 12

सम्बंध 14

कार्य 16

सृजनात्मक शक्ति 16

प्राकृतिक जगत 17

आत्मिक वरदान 18

व्यक्तिगत नवीनीकरण 20

पवित्रीकरण 21

अनुग्रह 22

सामान्य अनुग्रह 22

वाचा का अनुग्रह 23

उद्धाररूपी अनुग्रह 24

प्रकाशन 25

सामान्य प्रकाशन 26

विशेष प्रकाशन 26

प्रज्जवलित करना और आंतरिक अगुवाई देना 27

उपसंहार 29

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय चार

पवित्र आत्मा

परिचय

प्रत्येक मसीही परम्परा में किसी न किसी विशेष बात पर बल दिया जाता है। कुछ परम्पराएं आराधना पर बल देती हैं। कुछ धर्मशिक्षा और सत्य पर बल देती हैं। कुछ सामाजिक सहभागिता और भले कार्यों पर बल देती हैं। कुछ विश्वासियों की एकता पर बल देती हैं। कुछ उत्साहपूर्ण मसीही जीवन पर बल देती हैं। ये सब अच्छी बाते हैं जिन पर बल दिया जाता है।

परन्तु इन सब के नीचे एक वास्तविकता पाई जाती है, जिसे प्राय: अनेक मसीहियों द्वारा नजरअंदाज किया जाता है, जो हमारी इन सब अच्छी बातों को जोड़ती है। वही है जिसमें से ये सब अच्छी बातें मसीह की देह में बहती हैं। वह वही व्यक्तित्व है जो मसीही विश्वास के इन और अन्य क्षेत्रों में प्रोत्साहन और शक्ति प्रदान करता है। वह सदैव हमारे साथ है जो हमें उद्धार प्रदान करने के लिए परिश्रम करता रहता है। हमारे भीतर पाया जाने वाला जीवन वही है। वह कोई और नहीं परन्तु परमेश्वर का पवित्र आत्मा है।

प्रेरितों के विश्वास-कथन की हमारी श्रृंखला में यह हमारा चौथा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक "पवित्र आत्मा" रखा है क्योंकि हम विश्वास-कथन के उस विश्वास-सूत्र पर ध्यान देंगे जो पवित्र आत्मा, त्रिएक परमेश्वर के तीसरे व्यक्तित्व में विश्वास की पुष्टि करता है।

प्रेरितों का विश्वास-कथन एक पंक्ति में पवित्र आत्मा के विषय को प्रत्यक्ष रूप से संबांधित करता है।

> मैं पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूँ।

विश्वास-कथन में उसके विषय में अन्य वचन यही है कि मरियम के गर्भ में यीशु का गर्भधारण पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ। जैसे कि आप देख सकते हैं, विश्वास-कथन पवित्र आत्मा के बारे में स्पष्ट रूप से बहुत ही कम बात करता है। परन्तु यह उसके बारे में महत्वपूर्ण सत्यों को उजागर करता है जो सम्पूर्ण इतिहास में विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं।

पवित्र आत्मा के विषय में हमारा विचार-विमर्श तीन भागों में बाँटा जाएगा। पहला, हम उसके ईश्वरवत्व, परमेश्वरत्व में उसकी पूर्ण सहभागिता के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम उसके याजकपद को देखेंगे, यह ध्यान देते हुए कि पवित्र आत्मा एक सच्चा व्यक्तित्व है, न कि मात्र एक ईश्वरीय शक्ति। और तीसरा, हम उस कार्य पर ध्यान देंगे जो उसने अतीत में किया है, और जो वो आज भी करना जारी रखता है। आइए हम यीशु के ईश्वरत्व के साथ प्रारम्भ करें।

ईश्वरत्व

पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को जाँचने के लिए हम दो दिशाओं में देखेंगे। एक ओर हम देखेंगे कि प्रेरितों का विश्वास-कथन आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है। और दूसरी ओर हम विश्वास-कथन की शिक्षा के बाइबल-आधार पर ध्यान देंगे। आइए यह देखने के द्वारा आरम्भ करें कि किस प्रकार प्रेरितों का विश्वास-कथन पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों का विश्वास-कथन

जब पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के बारे में बात की जाती है तो एक प्रश्न जो लोग प्राय: पूछते हैं वह यह है कि क्या कलीसिया ने सदैव पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि या उसका अंगीकार किया है या नहीं। और निश्चित रूप से हमारे पास उपलब्ध ऐतिहासिक प्रलेख में पाया जाता है कि नाईसीन विश्वास-कथन और नीसीया की परिषद ने आत्मा के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं किया था, और इसलिए एक और परिषद बुलाई गई थी, और वह, मैं सोचाता हूँ, चाल्सीदोन की परिषद थी जिसमें चाल्सीदोन की परिषद ने पुष्टि की कि पवित्र आत्मा की आराधना पुत्र के साथ पूर्ण ईश्वरीय रूप में की जानी चाहिए। इसी कारण कुछ लोग यह कहते हैं, "कलीसिया ने सदैव पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को नहीं माना है।" मैं सोचता हूँ कि यह गलत है। परिषदों का आयोजन कभी भी नई धर्मशिक्षाओं की रचना करने के लिए नहीं किया गया था। परिषदों का आयोजन सदैव झूठी शिक्षाओं के समक्ष कलीसिया की ऐतिहासिक और पारम्परिक शिक्षा को स्पष्ट करने के लिए जाता था। और इसलिए आप कह सकते हैं कि परिषदों की घोषणाओं के कारण हमारे पास इस बात पर विश्वास करने का बहुत ही अच्छा कारण है कि प्रेरितों के समय से लेकर प्रेरितीय अगुवों (फादर्स) और कलीसिया के आरम्भिक धर्मविज्ञानियों तक हम पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व की शिक्षा को देख सकते हैं।

डॉ. स्टीव ब्लैकमोर

आरम्भ से ही, हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि प्रेरितों का विश्वास-कथन स्पष्ट रूप से नहीं दर्शाता कि पवित्र आत्मा ईश्वरीय है। परन्तु यह अप्रत्यक्ष रूप से कम से कम दो प्रकार से आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है। पहला, इसकी त्रिएक्य संरचना पवित्र आत्मा को महत्वपूर्ण रूपों में पिता और पुत्र के समान बनाती है। और दूसरा, यीशु के जन्म के विषय में विश्वास-कथन का वर्णन दर्शाता है कि पवित्र आत्मा ईश्वरीय है। आइए हम विश्वास-कथन की संरचना के साथ आरम्भ करके इन दोनों विषयों पर ध्यान दें।

संरचना

आपको याद होगा कि एक पिछले अध्याय में, जब हमने परमेश्वर की धर्मशिक्षा के दृष्टिकोण से विश्वास-कथन का अध्ययन किया था, तो हमने उल्लेख किया था कि प्रेरितों के विश्वास-कथन को तीन मुख्य भागों से बना हुआ देख सकते हैं, और प्रत्येक भाग "मैं... विश्वास करता हूँ" के साथ प्रारम्भ होता है। पहला भाग पिता-परमेश्वर में विश्वास करने के विषय में बात करता है। दूसरा भाग यीशु मसीह, उसके पुत्र और हमारे प्रभु में विश्वास करने के बारे में है। और तीसरा भाग पवित्र आत्मा में विश्वास को दर्शाता है, और उसकी सक्रिय सेवकाइयों की सूची प्रस्तुत करता है।

जिस प्रकार हमने पिछले अध्याय में देखा, प्रेरितों का विश्वास-कथन समय दर समय विकसित हुआ है, और इसके पुराने प्रारूप बपतिस्मा से सम्बन्धित स्थानीय विश्वास-कथन थे। इन कुछ प्रारम्भिक विश्वास-कथनों में "मैं... विश्वास करता हूँ" जैसे शब्द यीशु के विषय में पाए जाने वाले सूत्रों से पहले आते थे। परन्तु अन्य प्रारूपों में केवल "और" शब्द पाया जाता था, जैसे कि विश्वास-कथन का वह प्रारूप जिसे 700 ईस्वी में प्रमाणित किया गया था। परन्तु उनके विशिष्ट शब्द-प्रयोग के बावजूद उनका विचार एकसमान ही था: विश्वास-कथन को परमेश्वर के तीन व्यक्तित्वों के अनुसार विभाजित किया गया था।

और इस विभाजन को कलीसिया के द्वारा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है। यह त्रिएक्य विधि इस विश्वास को अभिव्यक्त करती है कि मात्र एक ही परमेश्वर है, और कि उसका अस्तित्व तीन व्यक्तित्वों में है, जिसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के व्यक्तित्वों में जाना जाता है।

प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे (फादर) हिप्पोलिटस, जिसका जीवनकाल 170 से 236 ईस्वी तक का था, ने स्पष्ट किया कि उसके समय में प्रयोग किए जाने वाले बपतिस्मा-सम्बंधी विश्वास-कथन में त्रिएक्य संरचना बहुत ही स्पष्ट पाई जाती थी। यह विश्वास-कथन शायद एक स्थानीय विश्वास-कथन के रूप में आरम्भ हुआ, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह काफी प्रसिद्ध हो गया था। इसकी भाषा आधुनिक प्रेरितों के विश्वास-कथन से काफी मिलती-जुलती है, और बपतिस्मा-सम्बंधी संस्कारों में इसका प्रयोग इसके दृढ़ त्रिएक्य महत्व को दर्शाता है।

हिप्पोलिटस ने स्पष्ट किया कि एक व्यक्ति को तीन बार पानी में डुबो कर बपतिस्मा दिया जाता था। प्रत्येक डुबकी पर बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति को त्रिएकता के किसी एक व्यक्तित्व से सम्बंधित बपतिस्मा के विश्वास-कथन के भाग की पुष्टि करनी होती थी। पहले वह व्यक्ति पिता से सम्बंधित विश्वास-सूत्रों में विश्वास जाहिर करता था; फिर उसे डुबोया जाता था। फिर पुत्र से सम्बंधित विश्वास-सूत्रों की पुष्टि की जाती थी, और तब दूसरी डुबोया जाता था। और अंत में, पवित्र आत्मा से सम्बंधित विश्वास-सूत्रों की पुष्टि और फिर तीसरी एवं अंतिम बार डुबोया जाना। प्रारम्भिक कलीसिया में इन और इन जैसी अन्य क्रियाओं के माध्यम से हम देख सकते हैं कि विश्वास-कथन की संरचना जानबूझकर त्रिएकता के प्रत्येक व्यक्तित्व के ईश्वरत्व, पवित्र आत्मा के भी, को दर्शाने के लिए बनाई गई थी।

दूसरा तरीका जिसके द्वारा प्रेरितों का विश्वास-कथन पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है वह है मरियम द्वारा यीशु का गर्भधारण।

मरियम द्वारा यीशु का गर्भधारण

प्रेरितों का विश्वास-कथन कहता है कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र,

> पवित्र आत्मा के द्वारा पैदा हुआ।

यह कथन स्पष्ट रूप से घोषणा नहीं करता कि पवित्र आत्मा पूर्ण रूप से ईश्वरीय है, परन्तु यह इस विश्वास को बलपूर्वक दर्शाता है। यीशु के पैदा होने के बारे में बोलते हुए, विश्वास-कथन लूका 1:35 की ओर संकेत करता है जहाँ स्वर्गदूत मरियम से ये वचन कहता है:

> पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। (लूका 1:35)

इस पद में पवित्र आत्मा को परमप्रधान की सामर्थ्य के समान दर्शाया गया है। जैसा कि हम इसी अध्याय में बाद में देखेंगे, कि केवल परमेश्वर में ही परमप्रधान की सामर्थ्य हो सकती है। अत: पवित्र आत्मा के कार्य के उदाहरण के रूप में इस पद की ओर संकेत करते हुए प्रेरितों का विश्वास-कथन आत्मा के पूर्ण ईश्वरत्व की पुष्टि करता है। इस निष्कर्ष की पुष्टि इब्रानियों 10:5-7 में की गई है, जो कहता है:

> इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है, "बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिए एक देह तैयार की। होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैंने कहा, "देख, मैं आ गया हूँ, पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है, ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करुँ।' " (इब्रानियों 10:5-7)

यहां हमें यह बताया गया है कि यीशु के मानव शरीर की रचना करने का कार्य परमेश्वर का ही था। इस प्रकार के पदों के प्रकाश में, यह कहना सुरक्षित होगा कि जब प्रेरितों का विश्वास-कथन यीशु के जन्म को पवित्र आत्मा का कार्य दर्शाता है तो यह आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि ही करना चाहता है।

अब जब हमने देख लिया है कि किस प्रकार प्रेरितों का विश्वास-कथन पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व में विश्वास व्यक्त करता है, तो आइए हम जो यह कहता है उसके बाइबल पर आधार को देखें।

बाइबल पर आधार

इस बात को पहचानना बड़े महत्व की बात है कि जिस विश्वास की हम पुष्टि करते हैं उसकी पुष्टि सदियों से निरन्तर होती आ रही है। यह एक कारण है कि कैसे पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के बारे में प्रेरितों के विश्वास-कथन की शिक्षा को समझना सहायक है। फिर भी, हमें सबसे अधिक साहस पवित्रशास्त्र से ही मिलता है। हम विश्वास-कथन को पवित्रशास्त्र के सारांश के रूप में समझते हैं न कि उसके प्रतिस्थापन के रूप में। इसी कारण, हमारे लिए इस बात का निश्चय कर लेना सदैव आवश्यक है कि जो विश्वास-कथन कहता है वह बाइबल पर आधारित है।

> मैं सोचता हूँ कि हम उन चार भावों को देखते हैं जिनमें पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व की पुष्टि करने की ओर हमें संकेत देता है। पहला, यह तथ्य कि कुछ प्रलेखों में पवित्र आत्मा को परमेश्वर के साथ अदल-बदल कर प्रयोग किया जाता है। पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व का दूसरा प्रमाण यह तथ्य है कि ऐसी कुछ विशेषताएं जो केवल परमेश्वर में हो सकती हैं वे पवित्र आत्मा में दर्शाई गई हैं। तीसरा, पवित्र आत्मा उन कार्यों को भी कर सकता है जो केवल परमेश्वर कर सकता है। और अंत में, हम पाते हैं कि पवित्र आत्मा उस एकमात्र नाम में शामिल किया जाता है- मत्ती 28- जिसमें मसीहियों को बपतिस्मा दिया जाता है।
>
> डॉ. कीथ जाँनसन

पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व पर विश्वास करने के लिए बाइबल का आधार कई रूपों में दर्शाया जा सकता है, हम उसे संबोधित किए गए नामों, उसमें पाई जाने वाली विशेषताओं, उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों और त्रिएक्य विधियों जो उसका उल्लेख करती हैं पर ध्यान देंगे। आइए हम पवित्र आत्मा के लिए पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले नामों से प्रारम्भ करें।

नाम

बाइबल में पवित्र आत्मा को अनेक नामों से संबोधित किया जाता है। इनमें से कुछ नाम बहुत ही अप्रत्यक्ष रूप से उसके ईश्वरत्व को दर्शाते हैं। वहीं अन्य नाम उसके ईश्वरत्व को स्पष्टता से दर्शाते हैं।

शायद वह नाम जो सबसे अप्रत्यक्ष रूप से उसके ईश्वरत्व को दर्शाता है वह नाम है "पवित्र आत्मा"। शब्द "पवित्र" का प्रयोग सृष्टि के उन पहलुओं के लिए किया जा सकता है जो किसी भी तरह से ईश्वरीय नहीं है। शब्द "पवित्र" सामान्यत: उन बातों को दर्शाता है जो उन जैसी अन्य बातों से भिन्न होती हैं क्योंकि वे किसी न किसी तरह से परमेश्वर के लिए विशेष होती हैं। इसलिए, शब्द "पवित्र" अपने आप में नहीं दर्शाता कि पवित्र आत्मा ईश्वरीय है।

लेकिन फिर भी यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि पूरे नए नियम में यह परमेश्वर ही है जिसे "पवित्र" कहा जाता है। हम इसे दर्जनों अनुच्छेदों में देख सकते हैं, जैसे 2राजा 19:22; यशायाह 30:11-15 और होशे 11:9-12। और अन्य अनुच्छेद भी हैं जो परमेश्वर को पवित्र आत्मा के नाम से पुकारते प्रतीत होते हैं,

जैसे कि यशायाह 63:10-11। हम इस प्रकार के नामकरण को प्राचीन परन्तु प्रेरणारहित यहूदी साहित्य में पाते हैं, जैसे बुद्धि की पुस्तक के अध्याय 9 के पद 17 में। पुराने नियम की इस पृष्ठभूमि में नाम "पवित्र आत्मा" में ईश्वरत्व के आशय को देखना उचित है।

इन अप्रत्यक्ष नामों को मन में रखकर, आइए उन कुछ नामों को देखें जो पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को इस प्रकार दर्शाते हैं जो अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष के बीच में पाए जाते हैं। इन नामों में "प्रभु का आत्मा," "परमेश्वर का आत्मा," "जीवित परमेश्वर का आत्मा" पाए जाते हैं। इनके अतिरिक्त "यीशु का आत्मा," "मसीह का आत्मा," "यीशु मसीह का आत्मा," और "तुम्हारे पिता का आत्मा," "उसके पुत्र का आत्मा" एवं "उसका आत्मा जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया"। ये सब नाम यह दर्शाते हुए बताते हैं कि पवित्र आत्मा ईश्वरीय है क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा से उसी प्रकार संयोजित है जिस प्रकार एक मनुष्य अपनी आत्मा से संयोजित है। पौलुस ने 1कुरिन्थियों 2:11 में इस सम्बंध को यह कहते हुए प्रत्यक्ष रूप से दर्शाया है:

> मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। (1कुरिन्थियों 2:11)

हमारी आत्माएं हमारे मनुष्य होने का एक हिस्सा हैं। और उनके बारे कुछ भी अमानवीय नहीं है। वे पूर्ण रूप से मानवीय हैं। उसी प्रकार, पवित्र आत्मा भी पूर्ण रूप से ईश्वरीय है। और यही उसे पिता का मन जानने के योग्य बनाता है। अत: मसीहियों के समक्ष पिता के मन को प्रकट करने के अपने कार्य के द्वारा पवित्र आत्मा स्वयं को परमेश्वर के रूप में दर्शाता है।

अंत में, ऐसे कुछ अनुच्छेद हैं जो बहुत ही स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रूप में पवित्र आत्मा को "परमेश्वर" नाम के द्वारा दर्शाते हैं। प्रेरितों के काम 5:3-4 में हनन्याह को कहे गए पतरस के शब्दों को सुनें:

> हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?... तू मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है। (प्रेरितों के काम 5:3-4)

इस अनुच्छेद में, पतरस ने पहले कहा था कि हनन्याह ने पवित्र आत्मा से झूठ बोला है। और फिर पतरस ने स्पष्ट किया कि उसका क्या अर्थ था जब उसने कहा कि हनन्याह ने परमेश्वर से झूठ बोला है। यहां प्रेरित पतरस ने स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा को "परमेश्वर" कहा।

अत: जब हम उन नामों को देखते हैं जिनके द्वारा पवित्रशास्त्र में पवित्र आत्मा को संबोधित किया जाता है, तो हम देख सकते हैं कि उनमें से अधिकांश अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूपों में उसके ईश्वरत्व को दर्शाते हैं।

अन्य तरीका जिसके द्वारा बाइबल पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को दर्शाता है वह है उसके साथ ईश्वरीय विशेषताओं को दर्शाना।

चरित्र

मसीही धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के दो भिन्न प्रकारों के चरित्र होने के बारे में पारम्परिक रूप से बात की है, वे हैं- सूचनीय चरित्र और असूचनीय चरित्र। एक ओर तो उसमें सूचनीय चरित्र हैं जिन्हें उसके कुछ प्राणियों के साथ "सूचित" या "साझा" किया जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर में विवेक या तर्क का चरित्र पाया जाता है, जिसे वह मनुष्यों को बताता व उनके साथ साझा करता है। नश्वर प्राणियों के रूप में मनुष्य परमेश्वर के तर्क या विवेक को पूरी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तरह से समझ नहीं सकते। परन्तु फिर भी हमारे भीतर विवेकपूर्ण या तर्कपूर्ण रूप में सोचने की क्षमता है। निसंदेह, इसका अर्थ यह नहीं है कि हम ईश्वरीय है। यह प्रमाणित करता है कि हमें एक विवेकपूर्ण परमेश्वर के द्वारा रचा गया है जिसने विवेक की अपने चरित्र को काफी मात्रा में हमें प्रदान किया है। हमारा विवेक उसी के विवेक से निकलता है; हम विवेक के उसी के चरित्र को दर्शाते हैं क्योंकि हम उसी के द्वारा रचे गए प्राणी हैं।

परमेश्वर का अन्य सूचनीय चरित्र उसका प्रेम है। और पवित्रशास्त्र अनेक स्थानों पर सिखाता है कि दूसरे लोगों के लिए हमारा प्रेम, और परमेश्वर के लिए भी, सीधे परमेश्वर की प्रेम के चरित्र से निकलता है। हम इसे गलातियों 5:2; इफिसियों 5:1; 2तिमुथियुस 1:7 और 1यूहन्ना 4:7-21 जैसे स्थानों में देखते हैं।

परन्तु परमेश्वर में असूचनीय चरित्र भी पाए जाते हैं- वे चरित्र जो स्वभाव से ही उसके द्वारा रचे गए प्राणियों के साथ बांटे नहीं जा सकते। परमेश्वर के सबसे जाने-माने असूचनीय चरित्र ये हैं- सर्वज्ञता, जो उसकी कुशाग्रता, ज्ञान और बुद्धि हैं; उसकी सर्वसामर्थ्य, जो कि उसकी अनश्वर शक्ति है; उसकी सर्वव्यापकता, जो एक ही समय में सब स्थानों पर पाई जाने वाली उसकी उपस्थिति है; और उसकी अनन्तता, जो कि उसका शाश्वत् और अटूट स्व-अस्तित्व है। चूँकि परमेश्वर के असूचनीय चरित्र केवल उसी में पाए जा सकते हैं इसलिए हम यह दिखाकर कि उसमें ये सब पाए जाते हैं, साबित कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है। और जब हम पवित्रशास्त्र का सर्वेक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वास्तव में उसमें ये सब पाए जाते हैं। सबसे पहले पवित्र आत्मा की सर्वज्ञता पर ध्यान दें।

पवित्रशास्त्र कहता है कि आत्मा पूर्ण रूप से परमेश्वर के मन को जानता है। हम इस विचार को इफिसियों 1:17 और 1कुरिन्थियों 2:10-11 में पाते हैं। निसंदेह, परमेश्वर का मन अनश्वर है, और उसे जानने के लिए वैसे ही एक अनश्वर मन की आवश्यकता होती है। परमेश्वर के सर्वज्ञ मन को जानने की पवित्र आत्मा की योग्यता के द्वारा स्वयं पवित्र आत्मा सर्वज्ञ होने के रूप में प्रमाणित हो जाता है। और क्योंकि वह सर्वज्ञ है, तो वह अवश्य ही परमेश्वर है।

पवित्र आत्मा अपने सर्वसामर्थ्य के द्वारा भी परमेश्वर के रूप में प्रमाणित होता है। उसकी सामर्थ्य परमेश्वर की असीमित सामर्थ्य है। पवित्रशास्त्र में अनेक अनुच्छेद पवित्र आत्मा की शक्ति के बारे में बात करते हैं, जैसे कि 1शमूएल 10:6; रोमियों 15:9; 1कुरिन्थियों 12:11 और 1थिस्सलुनिकियों 1:5। उत्पत्ति 1:1-3 में पवित्र आत्मा के परमेश्वर की सामर्थ्य के साथ जोड़े जाने पर ध्यान दें:

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था, तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। जब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो," तो उजियाला हो गया। (उत्पत्ति 1:1-3)

जैसा कि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं, पुराने नियम में परमेश्वर के उल्लेख में पूर्ण त्रिएकता को समझा जाता था। परन्तु भाषा और संदर्भ के अनुसार किसी एक विशेष व्यक्तित्व पर दिए गए महत्व को देखना भी उचित है। इस विषय में महत्व परमेश्वर के आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व पर है। अत: ज्योति या प्रकाश की रचना करने का कार्य पवित्र आत्मा के द्वारा किया गया था। यही सब बातें उन सब के लिए भी सत्य हैं जिन्हें परमेश्वर ने इस अध्याय में रचा। परन्तु पवित्र आत्मा में ऐसी सर्वसामर्थ्य होने, शून्य में से सृष्टि की रचना करने के लिए उसे पूर्ण ईश्वरीय होना अवश्य था।

अन्य असूचनीय चरित्र जो पवित्र आत्मा में पाया जाता है, वह है सर्वव्यापकता। भजन 139:7-10 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि आत्मा सृष्टि के प्रत्येक भाग में उपस्थित है, आकाश की ऊँचाइयों से लेकर समुद्र की गहराई तक।

और पवित्र आत्मा में अनन्तता का चरित्र भी पाया जाता है। इब्रानियों 9:14 पवित्र आत्मा को "अनन्त आत्मा" कहता है, अर्थात् उसका अस्तित्व सदैव से रहा है और सदैव अस्तित्व में रहेगा।

इन और इनके जैसे अन्य असूचनीय चरित्रों के माध्यम से बाइबल स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

कार्य

पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के लिए पवित्रशास्त्र में तीसरा प्रमाण वह कार्य है जो वह करता है। हम पवित्र आत्मा के कार्य की जांच और भी गहराई से इस अध्याय में बाद में करेंगे। इस समय हम उसके कुछ कार्यों को सरसरी नजर से देखेंगे, यह जानने के लिए कि किस प्रकार वे उसके ईश्वरत्व को प्रदर्शित करते हैं।

> इस बात को प्रमाणित करने का एक भाग पवित्रशास्त्र में उसके कार्यों को देखना है। परमेश्वर का आत्मा वह है जो मसीह की साक्षी देता है, हमें मसीह से जोड़ता है, नया जीवन प्रदान करता है, पुनरुत्थान लेकर आता है, और सृष्टि की रचना में सम्मिलित होता है। ये सब कार्य परमेश्वर के कार्यों से कम नहीं हैं। उन्हें मनुष्यों के साथ जोड़ा नहीं जा सकता; उन्हें स्वर्गदूतों या किसी भी रचित वस्तु के साथ भी जोड़ा नहीं जा सकता। वे वही हैं जो परमेश्वर स्वयं करता है। और उस आधार पर, हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के कार्यों को करता है और इसलिए वह केवल व्यक्तित्व ही नहीं ईश्वरीय भी है।
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लुम

पवित्र आत्मा ऐसे अनेक कार्य करता है जिन्हें बाइबल दर्शाती है कि केवल परमेश्वर ही कर सकता है, और वे ईश्वरीय सामर्थ्य एवं चरित्रों को भी दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, जब वह हमारी आत्माओं को संजीवित करता है तो नए जीवन की रचना करता है, जिसे हम रोमियों 8:11 में पढ़ सकते हैं। पिता के पास हम उसी के द्वारा पहुंच सकते हैं, जो हमें इफिसियों 2:18 में सिखाया जाता है। वह हमें उद्धार प्रदान करता है, जो हम रोमियों अध्याय 5 से 8 में देख सकते हैं। नबियों के चमत्कारों के पीछे उसी की सामर्थ्य होती है, और हमारे प्रभु यीशु के चमत्कारों में भी, जैसा हम रोमियों 15:4-19 जैसे अध्यायों में देख सकते हैं। यद्यपि पवित्र आत्मा के ईश्वरीय कार्यों की सूची लगभग अनन्त है, तो आइए इसे स्पष्ट करने के लिए हम हमारे ध्यान को कुछ महत्वपूर्ण उदाहरणों की ओर लगाएं।

पहली बात यह है कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के लिखे जाने को प्रेरित किया है, जो कि परमेश्वर का वचन है। और इस बात को पहचानने के द्वारा कि पवित्र आत्मा का वचन ही परमेश्वर का वचन है, हम मान लेते हैं कि पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है। हम इस विचार को मत्ती 10:20, यूहन्ना 3:34, प्रेरितों के काम 1:16 एवं 4:31 और इफिसियों 6:17 में पाते हैं।

सिर्फ एक उदाहरण के रूप में 2पतरस 1:20 और 21 में पतरस के शब्दों को सुनें:

> पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचार-धारा के अनुसार नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। **(2पतरस 1:20-21)**

इस अनुच्छेद में पतरस ने सिखाया कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा में होकर बोलना परमेश्वर की ओर से बोलना है। पवित्रशास्त्र परमेश्वर का वचन है क्योंकि यह परमेश्वर, विशेषकर परमेश्वर के तीसरे व्यक्तित्व- पवित्र आत्मा, के द्वारा प्रेरित और बोला गया है।

अन्य उदाहरण के रूप में परामर्शदाता या सहायक के रूप में पवित्र आत्मा का कार्य दर्शाता है कि वह ईश्वरीय है। यूहन्ना अध्याय 14 से 16 में यीशु ने पवित्र आत्मा का उल्लेख सहायक के रूप में किया है जो सत्य को प्रकट करना, पापी संसार को दोषी ठहराना, और यीशु की साक्षी देना जैसे कार्य करता है। शुरु में शायद यह अटपटा लगे, यह सेवकाई पवित्र आत्मा को स्वयं यीशु की संसार में तात्कालिक उपस्थिति से भी महत्वपूर्ण बनाती है। जिस प्रकार यूहन्ना 16:7 में यीशु ने कहा:

> तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा। परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। (यूहन्ना 16:7)

एक क्षण के लिए इसके बारे में सोचें। स्वयं यीशु के अनुसार कलीसिया यीशु की तात्कालिक देहिक उपस्थिति की अपेक्षा पवित्र आत्मा की उपस्थिति से अधिक सहज अनुभव करेगी। परन्तु एक रचित, नश्वर प्राणी मसीह की संसार की उपस्थिति की आशीषों से बढ़कर नहीं हो सकता था। नहीं, पवित्र आत्मा के लिए पुत्र-परमेश्वर की अपेक्षा हमारे लिए अधिक लाभकारी होने के लिए आत्मा को परमेश्वर होना अवश्य है।

विधियां

पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को स्थापित करने में पवित्रशास्त्र का चौथा तरीका त्रिएक्य विधियां हैं जिसमें पिता और पुत्र के साथ उसका नाम भी शामिल होता है।

त्रिएक्य विधि पवित्रशास्त्र का वह अनुच्छेद है जो त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्वों का उल्लेख स्पष्ट रूप से समान आधार पर करता है, उनमें परस्पर सहयोग को दर्शाते हुए। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का समान सहभागियों के रूप में उल्लेख करने के द्वारा, बाइबल दर्शाती है कि पवित्र आत्मा उतना ही ईश्वरीय है जितने पिता और पुत्र। हम इन विधियों को रोमियों 15:30; 1कुरिन्थियों 12:4-6; 2थिस्सलुनिकियों 2:13-14 एवं कई अन्य स्थानों में पा सकते हैं। आइए इन विधियों के केवल दो उदाहरणों को देखें।

पहला उदाहरण मत्ती 28:19 में पाया जाता है जहां यीशु ने यह आज्ञा दी:

> इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। (मत्ती 28:19)

इस विधि में यीशु ने दर्शाया कि बपतिस्मा त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्वों के नाम या अधिकार से दिया जाएँ यह आज्ञा परमेश्वर के व्यक्तित्वों को दिए जाने वाले सम्मान में कोई अन्तर नहीं करती। इसकी अपेक्षा वह तीनों को समान रूप से प्रस्तुत करती है।

दूसरा स्पष्ट उदाहरण 2कुरिन्थियों 13:14 में प्रकट होता है जहां पौलुस ने इन शब्दों को लिखा था:

> प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। (2कुरिन्थियों 13:14)

अपनी पत्री के अंतिम आशीष वचनों में पौलुस ने पुत्र, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह; पिता, जिसे वह सामान्यत: परमेश्वर कहता है; और पवित्र आत्मा का उल्लेख एक साथ किया। ऐसा करने में, उसने तीनों व्यक्तित्वों को उद्धार की आशीषों को प्रदान करने में समान रूपों में प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार की विधियां दर्शाती हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में एक समान व्यक्तित्व है। वे दर्शाती हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा उन सब विषयों में एक समान है जिसमें मूलभूत ईश्वरीय चरित्र और कार्य सम्मिलित होते हैं, जैसे पापियों को अनुग्रह और उद्धार प्रदान करना और परमेश्वर के रूप में सम्मान और आराधना प्राप्त करना।

> त्रिएकता की मसीही शिक्षा सिखाती है कि एक परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों के रूप में अस्तित्व की एकता के रूप में पाया जाता है। क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर है, इसलिए यह सही और उचित है कि हम न केवल उससे प्रार्थना करें, बल्कि परमेश्वर के समान उसे आदर भी दें।
>
> डॉ. कीथ जॉनसन

अब जब हमने पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व पर चर्चा कर ली है, तो अब हम हमारे दूसरे शीर्षक- उसके व्यक्तित्व की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। इस भाग में, हम इस तथ्य की ओर देखेंगे कि हमें पवित्र आत्मा से मात्र एक ईश्वरीय शक्ति या सामर्थ्य के रूप में नहीं बल्कि एक सच्चे व्यक्तित्व के रूप में व्यवहार करना जरुरी है।

व्यक्तित्व

कलीसिया के सम्पूर्ण इतिहास में अनेक समूहों ने पवित्र आत्मा के इस प्रकार के व्यक्तित्व का इनकार किया है जिसमें भिन्न आत्म-चेतना और ईश्वरीय व्यक्तिगत चरित्र पाए जाते हैं। कुछ ने विश्वास किया है कि वह अन्य रूप में पिता ही है। अन्यों ने यह तर्क दिया है कि नाम "पवित्र आत्मा" केवल एक नाम है जिसके द्वारा प्राचीन लेखक परमेश्वर की सामर्थ्य का वर्णन करते थे। परन्तु प्रेरितों के विश्वास-कथन की संरचना में हम देख सकते हैं कि यह बाइबल के उस दावे की पुष्टि करता है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में एक वास्तविक और भिन्न व्यक्तित्व है। यह वचन की स्पष्ट शिक्षा है और सदियों से मसीही कलीसिया की प्रत्येक शाखा का यही दावा रहा है।

> पवित्र आत्मा का वर्णन नए नियम में व्यक्तित्व से संबंधित शब्दों में किया गया है, न कि अव्यक्तिक सामर्थ्य के रूप में। और शेष कलीसिया ने उस साक्षी के चारों और एकत्रित होकर कहा है कि हम भी इसी बात पर भरोसा करते हैं। यह सत्य है कि इस पर गहन तर्क-वितर्क होने के पश्चात्, बाद वाले विश्वास-कथन के शब्दों में इसे ढ़ालने में तीन सौ से चार सौ वर्ष लगे। परन्तु जब कैसरिया का बासील इस पर चौथी सदी में चर्चा करता है, तो वह नई धर्मशिक्षा की रचना नहीं कर रहा है, वह केवल उस बात को संरचना प्रदान कर रहा है जिस पर लोग तीन सौ वर्षों से विश्वास करते आ रहे हैं।
>
> डॉ. पीटर वाकर

प्रारम्भ से हमें यह स्वीकार कर लेने की जरुरत है कि प्रेरितों का विश्वास-कथन इन विषयों को स्पष्ट या प्रत्यक्ष रूप से नहीं दर्शाता है। परन्तु जब हम मसीहियत की पहली कुछ सदियों में पवित्र आत्मा के विषय में महत्वपूर्ण धर्मविज्ञानीय तर्क-वितर्कों पर ध्यान देते हैं, तो हम देख सकते हैं त्रिएकता के एक

सदस्य के रूप में पवित्र आत्मा की विश्वास-कथन में पाई जाने वाली पुष्टि उसके व्यक्तित्व की भी पुष्टि है। शेष बाइबल-आधारित मसीहियत के साथ, प्रेरितों का विश्वास-कथन भी परमेश्वर के आत्मा के मात्र शक्ति या ईश्वरीय सामर्थ्य में निर्व्यक्तिकरण को ठुकरा देता है।

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व की विश्वास-कथन की पुष्टि के बाइबल-आधार पर हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम उन व्यक्तिगत चरित्रों को देखेंगे जो पवित्र आत्मा में पाए जाते हैं। दूसरा, हम पिता और पुत्र से उसकी व्यक्तिगत भिन्नता पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम त्रिएकता के अन्य सदस्यों के साथ उसके व्यक्तिगत सम्बंध का वर्णन करेंगे। हम उन चरित्रों के साथ प्रारम्भ करेंगे जो प्रमाणित करते हैं कि पवित्र आत्मा एक पूर्ण व्यक्तित्व है।

चरित्र

जब हम पवित्र आत्मा के व्यक्तिगत चरित्रों के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में वे विशेषताएं हैं जो उसमें निहित मनुष्यों में पाई जाने वाली विशेषताएं हैं- वे बातें जो उसमें तब ही पाई जा सकती हैं जब वह मात्र अव्यक्तिक शक्ति ही नहीं बल्कि वास्तविक व्यक्ति हो।

> मैं इसे नए नियम में बहुत ही उपयोगी समझता हूँ कि नया नियम न केवल पिता-परमेश्वर के नामों और शीर्षकों, पिता-परमेश्वर के कार्यों, पिता-परमेश्वर के चरित्रों, पिता-परमेश्वर के कार्यों के विषय में बात करता है, बल्कि यह पुत्र और पवित्र आत्मा के विषय में भी यही बात करता है। दूसरे शब्दों में, वे सभी व्यक्तिगत विशेषताएं जो बाइबल में पिता-परमेश्वर के बारे में कही गई हैं वहीं विशेषताएं नए नियम में पवित्र आत्मा के विषय में भी कही गईं हैं। और यह एक बार फिर हमें दर्शाता है कि पवित्र आत्मा एक व्यक्तित्व है, शक्ति या बल नहीं।
>
> डॉ. जे. लिगोन डंकन 3

पवित्र आत्मा में इतने अधिक व्यक्तिगत चरित्र पाए जाते हैं कि इस अध्याय में हम उनकी सूची नहीं बना सकते, इसलिए हम उसके व्यक्तित्व को दर्शाने में चार उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। हम यह कहते हुए आरम्भ करेंगे कि पवित्र आत्मा में इच्छा या अभिप्राय पाया जाता है। यह वह क्षमता है जिसका प्रयोग वह योजना बनाने, अभिलाषा रखने, और चयन करने में करता है। स्पष्टत:, जो भी प्राणी ये कार्य कर सकता है वह मात्र शक्ति या बल नहीं हो सकता। उसकी इच्छा के एक उदाहरण के रूप में, 1कुरिन्थियों 12:11 पर ध्यान दें, जहां पौलुस आत्मिक वरदानों के वितरण के बारे में बात करता है। सुनें पौलुस ने क्या लिखा:

> ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है। (1कुरिन्थियों 12:11)

पवित्र आत्मा चाहता है कि कुछ विशेष लोगों में कुछ विशेष वरदान हों, और अन्य लोगों में अन्य वरदान हों। अव्यक्तिक शक्तियों में योजनाएं और अभिलाषाएं नहीं होतीं। केवल व्यक्तियों में होती हैं। अत: पवित्र आत्मा का एक व्यक्ति होना अवश्य है।

पवित्र आत्मा में बुद्धि का चरित्र भी पाया जाता है जिसके द्वारा इसमें ज्ञान एवं दूसरों को शिक्षा देने की योग्यता भी पाई जाती है। वह इस बुद्धि को कई रूपों में अभिव्यक्त करता है जैसे कि परमेश्वर के मन को खोजने और जानने में, जैसे कि हम 1कुरिन्थियों 2:10-12, और उसमें अपना स्वयं का मन है यह बात हम रोमियों 8:27 में पढ़ते हैं। वह बुद्धि और ज्ञान प्रदान करता है, जैसे कि 1कुरिन्थियों 12:8 में। और वह शिक्षा देता है, लूका 12:12 में।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्वयं यीशु ने आत्मा की बुद्धि के विषय में यूहन्ना 14:26 में बात की थी। सुनें उसने वहां प्रेरितों से क्या कहा था:

> पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। (यूहन्ना 14:26)

अव्यक्तिक शक्तियां सोचती, जानती और सिखाती नहीं हैं। अत: बुद्धि का चरित्र प्रमाणित करता है कि आत्मा एक व्यक्तित्व है।

पवित्र आत्मा में भावनाएं, आंतरिक संवेदनाएं और स्नेह पाए जाते हैं जिनकी अभिव्यक्ति वह दूसरे लोगों और घटनाओं के प्रत्युत्तर में करता है। उसके अन्य व्यक्तिगत चरित्रों के समान उसकी भावनाएं प्रमाणित करती हैं कि वह एक व्यक्ति है, न कि मात्र एक शक्ति। उदाहरण के तौर पर, पवित्र आत्मा के प्रेम का उल्लेख रोमियों 15:30 में किया गया है। उसके आनन्द के विषय में 1थिस्सलुनिकियों 1:6 में कहा गया है। और सुनें किस प्रकार इफिसियों 4:30 में उसके शोक के बारे में कहा गया है:

> परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है। (इफिसियों 4:30)

यह सच्चाई कि पवित्र आत्मा में शोक जैसी भावनाएं पाई जाती हैं, दर्शाता है कि वह एक सच्चा व्यक्तित्व है।

इससे बढ़कर, आत्मा में वह चरित्र पाया जाता है जिसे हम माध्यम कह सकते हैं। उसमें इच्छा अर्थात् योजना बनाने और उसे अपने ही अनुसार करने की योग्यता पाई जाती है। और यह उसे अनेक कार्यों को करने के योग्य बनाता है जो केवल व्यक्तियों के द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना 15:26 और रोमियों 8:16 में साक्षी देता है। फिलिप्पियों 2:1 में वह हमारे साथ संगति करता है। और अध्याय 8:29 और 13:2 में बात करता और आज्ञा देता है। एक उदाहरण के तौर पर रोमियों 8:26-27 में पाए जाने वाले शब्दों को सुनें:

> आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है... वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है। (रोमियों 8:26-27)

यह सच्चाई कि पवित्र आत्मा विश्वासियों के लिए विनती करता है, यह उसके व्यक्तित्व का एक अन्य प्रमाण है। अव्यक्तिक शक्तियां और बल सच्चाई से आहें भरता हुआ विनती नहीं करता। केवल व्यक्ति ऐसा कर सकते हैं।

चार्ल्स स्पर्जन, 1834 से 1892 तक के जीवनकाल में रहने वाला महान् बैपटिस्ट प्रचारक, रोमियों 8:26-27 पर आधारित अपने संदेश पवित्र आत्मा की मध्यस्थता में यह कहता है। सुनें उसने क्या कहा:

> पवित्र आत्मा हमें हमारे शरीरों और मनों की दुर्बलताओं को सहन करने में सहायता करता है; वह हमें हमारे क्रूस को उठाने में सहायता करता है, चाहे वह शारीरिक पीड़ा हो, या मानसिक तनाव, या आत्मिक संघर्ष, या निन्दा, या गरीबी या सताव। वह हमारी कमजोरियों में सहायता करता है; और ईश्वरीय सामर्थ्य रखने वाले इस सहायक के साथ होने पर हमें परिणाम से डरने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर का अनुग्रह हमारे लिए पर्याप्त होगा; उसकी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध की जाएगी।

> यह जानना उत्साहपूर्ण है कि मेरे अन्दर कुछ कार्य हो रहा है, कोई मेरे अन्दर कार्य करता है, कि वह मेरे से बहुत अधिक सामर्थी है। और चाहे मैं कभी-कभी असहाय, या गुलामी में महसूस करुं, या कुछ भी हो जाए वह केवल भावनाओं की बात है; वह सच्चाई नहीं है। परमेश्वर का सर्वसामर्थी पवित्र आत्मा मुझे मसीह के स्वरूप में बनाने हेतु अथक परिश्रम से कार्य में लगा हुआ है- कितना बड़ा प्रोत्साहन है यह! यह राहत प्रदान भी करता है क्योंकि इसका अर्थ है कि मैं सदैव जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में हूँ, सदैव जीवित परमेश्वर के समक्ष हूँ। कि चाहे मैं अपनी असफलताओं को लोगों से छिपा लूँ, परन्तु उसके समक्ष कोई गुप्त पाप नहीं होता क्योंकि मैं परमेश्वर की उपस्थिति में रहता हूँ। क्योंकि पवित्र आत्मा एक पवित्र आत्मा है; परमेश्वर का आत्मा निर्मल है। निश्चिततः एक पासवान के रूप में मैं उस संतुलन को बनाए रखना चाहता हूँ जब मैं पाप से संघर्ष कर रहे लोगों को परामर्श देता हूँ। आशारहित न रहें। पवित्र आत्मा आपके हृदय और जीवन में कार्य करता है, और मसीह में भरोसा रखें और स्थिर बने रहें कि वह पाप के साथ आपके संघर्ष में आपको विजय प्रदान करे। और कभी उदासीन न रहें क्योंकि वही पवित्र आत्मा आप में और आपके साथ उपस्थित रहता है और कार्य करता है।
>
> डॉ. डेनिस जाँनसन

अब जब हमने देख लिया है कि किस प्रकार पवित्र आत्मा के व्यक्गित चरित्र उसके व्यक्तित्व को दर्शाते हैं, तो हम त्रिएकता में ही पिता और पुत्र से अलग व्यक्तित्व के रूप में उसकी भिन्नता पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं।

भिन्नता

हमें यह बात स्वीकार करने के साथ आरम्भ करना चाहिए कि बाइबल में ऐसे कई अनुच्छेद हैं जहां आत्मा और त्रिएकता के अन्य व्यक्तित्वों के मध्य भिन्नता स्पष्ट नहीं है। उदाहरण के तौर पर, गलातियों 4:6 में पवित्र आत्मा की पहचान परमेश्वर के पुत्र के आत्मा के रूप में की गई है और मत्ती 10:20 में उसे पिता के आत्मा के रूप में पहचाना गया है। और उसके कई और नाम भी हैं जो भिन्नता की अपेक्षा त्रिएकता के अन्य सदस्यों के साथ उसके सम्बंध को दर्शाते हैं।

यद्यपि इस प्रकार के अनुच्छेद प्रारंभिक कलीसिया में काफी वाद-विवाद के स्रोत थे, फिर भी ये निकट सम्बंध हमें चकित नहीं करने चाहिए। आखिरकार, त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्व मिलकर एक परमेश्वर हैं। अत: पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र के आत्मा के रूप में सोचना और इसके साथ-साथ इस बात पर बल देना भी कि वह उनसे पूर्ण रूप से भिन्न व्यक्तित्व है, बिल्कुल सही अर्थ को दर्शाता है।

आत्मा और त्रिएकता के अन्य व्यक्तित्वों के बीच भिन्नताओं को दर्शाने का एक तरीका पवित्रशास्त्र के उन अनुच्छेदों पर ध्यान देना है जो उनके बीच वार्तालाप को दर्शाते हुए उनमें पाई जाने वाली भिन्नताओं पर बल देते हैं। ऐसे अनेक अनुच्छेद हैं जो इन भिन्नताओं को दर्शाते हैं, परन्तु दो अनुच्छेद इस बात को दर्शाने में पर्याप्त होंगे कि आत्मा पिता और पुत्र से भिन्न है। पहला, यूहन्ना 16:7 में यीशु के शब्दों पर ध्यान दें:

> तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा। परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। (यूहन्ना 16:7)

इस घटना में यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा तब तक नही आएगा जब तक पुत्र को भेजा नहीं जाएगा। स्पष्टत: उसने यह कहते हुए स्वयं को आत्मा से अलग बताया कि दूसरा आने से पहले पहला चला जाता है। प्रत्येक की अपनी नियुक्त भूमिका है, और आत्मा की भूमिका तब तक शुरु नहीं होगी जब तक पुत्र का पृथ्वी पर का कार्य समाप्त न हो जाए और वह स्वर्ग में न चढ़ जाएँ यह स्पष्ट करता है कि आत्मा पुत्र से भिन्न है।

इसी प्रकार, आत्मा उन कार्यों को भी करता है जो पिता से भिन्न हैं। उदाहरण के तौर पर, हमारे सहायक होने की उसकी भूमिका के रूप में पवित्र आत्मा हमारी सुरक्षा का अभिवक्ता है, परमेश्वर के समक्ष हमारे विषय को रखने के द्वारा हमारी प्रार्थनाओं में सहायता करता है।

> सामान्यत:, आत्मा का कार्य मसीह के कार्य को लागू करना है। मसीह ने अपना जीवन, हमारे लिए अपना बलिदान, दिया है। यह आत्मा का कार्य है कि वह उसके कार्य को ले और हमारे हृदयों पर लागू करे, और इसलिए हमें ये दोनों चाहिए। मेरा अर्थ है कि यदि हमारे हृदयों में इसे लागू करने के लिए आत्मा न हो तो हमारा आकार बहुत अच्छा नहीं होगा क्योंकि मसीह-परमेश्वर का कार्य चाहता है कि इसके द्वारा हम अन्दर से बदल जाएँ। इसलिए आत्मा आता है और आत्मा नया करता है, हमें नया जन्म प्रदान करता है। आत्मा हमें पवित्र बनाता है- जिसे पवित्रीकरण कहते है- और आत्मा नियमित रूप से हमें हमारे जीवनों में वरदान और आशीषें और फल तथा ये सब कुछ प्रदान करता है, अत: आत्मा का कार्य काफी अनिवार्य है।
>
> डॉ. जॉन फ्रेम

उदाहरण के तौर पर रोमियों 8:26-27 में पौलुस ने इन शब्दों को लिखा:

> हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है। और मनों का जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है। (रोमियों 8:26-27)

जब पौलुस ने सिखाया कि पवित्र आत्मा पिता के समक्ष हमारे लिए विनती करता है, तो उसने दर्शाया कि वे भिन्न व्यक्तित्व हैं- एक विनती करता है और दूसरा विनती को सुनता है।

> वह पिता के समक्ष विनती करता है। वह हमारे हृदयों में बात करता है जब हम नहीं जानते कि क्या प्रार्थना करें और वह हमारे भीतर आहें भरता है, जैसे पौलुस कहता है, जिससे हम परमेश्वर से वे बातें कहते हैं जो हमें कहनी भी नहीं आतीं।
>
> डॉ. जॉन फ्रेम

> हम कह सकते हैं कि प्रार्थना करने कि नियामक पद्धति पिता से पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में प्रार्थना करना है। और फिर भी हम ऐसे अनुग्रह और स्वतंत्रता के धर्म के सदस्य हैं कि परमेश्वर की अखण्डता और हमारी प्राथनाओं की व्यवस्थित राह से कोई समझौता किए बिना भी पवित्र आत्मा को सीधे ही संबोधित किया जा सकता है।

डॉ. ग्लेन स्कोर्जी

पवित्र आत्मा के प्रति यह प्रार्थना, जिसे प्राय: कलीसिया अगुवे अगस्तीन के साथ जोड़ा जाता है, जिसका जीवनकाल 354 से 430 ईस्वी तक का था, हमारी अपनी प्रार्थनाओं के लिए एक अद्‍भुत नमूना प्रस्तुत करता है:

> मुझ में श्वांस भर, हे पवित्र आत्मा,
> कि मेरे सब विचार पवित्र हो जाएँ;
> मुझ में कार्य कर, हे पवित्र आत्मा,
> कि मेरे कार्य भी पवित्र हो जाएँ;
> मुझे आकर्षित कर, हे पवित्र आत्मा,
> कि मैं जो पवित्र है, उसी से प्रीति रखूँ;
> मुझे सामर्थ्य दे, हे पवित्र आत्मा,
> कि जो पवित्र है, उसकी रक्षा कर सकूँ;
> तब, मेरी रखवाली कर, हे पवित्र आत्मा,
> कि मैं सदैव पवित्र बना रहूँ।

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में उसके व्यक्गित चरित्रों एवं पिता और पुत्र से उसकी भिन्नता के आधार पर बात करने के बाद, आइए त्रिएकता के दूसरे व्यक्तित्वों के साथ उसके सम्बंध पर ध्यान दें।

सम्बंध

जिस प्रकार हमने इन सब अध्यायों में उल्लेख किया है, त्रिएकता के व्यक्तित्वों के बीच सम्बंध का पारम्परिक रूप से दो दृष्टिकोणों से वर्णन किया जाता रहा है। विशेषकर, धर्मविज्ञानियों ने सत्तामूलक त्रिएकता और विधानीय त्रिएकता के बारे में बात की है। ये दोनों एक ही त्रिएकता- पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के दृष्टिकोण हैं। परन्तु वे इन तीन ईश्वरीय व्यक्तित्वों के बीच सम्बंध के भिन्न पहलुओं पर बल देते हैं।

जब हम सत्तामूलक त्रिएकता के बारे में बात करते हैं, तो हम परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बात कर रहे हैं। इस दृष्टिकोण से, पवित्र आत्मा, पिता और पुत्र के साथ सामर्थ्य और महिमा में एक समान है। परमेश्वर के ये तीनों व्यक्तित्व अनश्वर, अनन्त और अपरिवर्तनीय हैं। और प्रत्येक में समान मूलभूत ईश्वरीय चरित्र, जैसे बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य पाए जाते हैं।

और जब हम विधानीय त्रिएकता की बात करते हैं, तो हम इस बात पर चर्चा करते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर के व्यक्तित्व परस्पर अन्तर्क्रिया या वार्तालाप करते हैं। इस दृष्टिकोण से, परमेश्वरत्व के प्रत्येक व्यक्तित्व में भिन्न उत्तरदायित्व, भिन्न अधिकार, और भिन्न भूमिका पाई जाती है। आत्मा का अधिकार पिता और पुत्र के उच्चतर अधिकार के अधीन होता है। और आत्मा की भूमिका विशालत: उनके निर्देशों को पूरा करना और उन्हें महिमा प्रदान करना होता है।

> जहां परमेश्वर है, वहां आत्मा भी है। उसका आत्मा केवल उसकी उपस्थिति को ही नहीं दर्शाता है, बल्कि उसके कार्य को भी। और इसलिए, जब आप देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर अपनी सृष्टि से सम्बंध बनाता है, तो पवित्र आत्मा के बिना उसका वर्णन करना असम्भव हो जाता है। पवित्र आत्मा इस समय मानवीय

इतिहास की अगुवाई कर रहा है। पवित्र आत्मा परमेश्वर की विधानीय देखभाल और प्रेम का दूत है।

डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

मसीही धर्मविज्ञान में, सत्तामूलक त्रिएकता और विधानीय त्रिएकता दोनों में, पवित्र आत्मा को तीसरा व्यक्तित्व कहा जाता है।

वह सत्तामूलक त्रिएकता का तीसरा व्यक्तित्व है क्योंकि वह पिता के श्वांस द्वारा निकला है, जो पहला व्यक्तित्व है, और पुत्र के द्वारा, जो दूसरा व्यक्तित्व है।

अब हमें यह कहने के लिए रुकना चाहिए कि ईस्टर्न ऑर्थोडोक्सी (पूर्वी सनातनी) की कलीसियाएं सिखाती हैं कि पवित्र आत्मा केवल पिता के श्वांस के द्वारा निकला है, पुत्र के द्वारा नहीं। शिक्षा में यह भिन्नता 1054 ईस्वी में पूर्वी और पश्चिमी कलीसियाओं में हुए विभाजन, जो आज भी पाया जाता है, के पीछे जो कारण था उसका हिस्सा थी। निसंदेह, क्योंकि प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना इस विवाद से पहले हो गई थी, इसलिए इसमें पूर्व और पश्चिम के बीच पाई जाने वाली इस असहमति को सम्बोधित नहीं किया गया है। और कलीसिया की दोनों शाखाएं प्रेरितों के विश्वास-कथन के सभी कथनों की पुष्टि करती हैं।

विधानीय त्रिएकता के सम्बंध में, पवित्र आत्मा को तीसरा व्यक्तित्व कहा जाता है क्योंकि पिता और पुत्र दोनों के अधीन उसकी श्रेणी तीसरी है। पवित्रशास्त्र अनेक रूपों में उसके अधीनीकरण को दर्शाता है। उदाहरण के तौर पर, उसे पिता और पुत्र के द्वारा भेजा या दिया गया है। पवित्रशास्त्र इस बात को लूका 11:13; यूहन्ना 14:26, 15:26 और प्रेरितों के काम 2:33 में इसे बताता है। और जब वह आता है, तो उस कार्य को करने के द्वारा जो उसे पिता और पुत्र के द्वारा करने को भेजा गया है, वह उनकी आज्ञा मानता है। हम इस बात को यूहन्ना 16:13; रोमियों 8:11 और 1पतरस 1:2 में पाते हैं।

निसंदेह, जब हम यह भी कहते हैं कि विधानीय त्रिएकता के दृष्टिकोण से पवित्र आत्मा के पास सबसे नीची श्रेणी है, तो इस बात पर बल देना महत्वपूर्ण है कि वह फिर भी पूर्ण परमेश्वर है, और सृष्टि के प्रत्येक पहलू पर उसका सम्पूर्ण सर्वोच्च अधिकार है। इससे बढ़कर, त्रिएकता में परस्पर भिन्नता का भाव भी पाया जाता है, क्योंकि जो एक व्यक्तित्व करता है, वे सब करते हैं। अत: पिता और पुत्र द्वारा पवित्र आत्मा के अधीनीकरण का अर्थ यह नहीं कि वह किसी प्रकार से उनसे निम्न है, वह नहीं है। अपने मूलभूत ईश्वरत्व में वह उनके समान है।

पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व मसीही धर्मविज्ञान का एक अनिवार्य भाग है। और जैसा हम देख चुके हैं, हमारे पास इसकी पुष्टि करने के अनेक कारण हैं। पवित्र आत्मा में वे सब चरित्र पाए जाते हैं जो उसे एक भिन्न, स्व-चेतन व्यक्तित्व के रूप में दर्शाते हैं। और पिता एवं पुत्र के साथ उसके सम्बंध व वार्तालाप किसी संशय को नहीं छोड़ते कि वह एक जीवंत व्यक्तित्व है न कि एक बुद्धिरहित शक्ति या बल। इस पारम्परिक धर्मशिक्षा में हम विश्वास रख सकते हैं और रखना भी चाहिए।

पवित्र आत्मा पर आधारित इस अध्याय में अब तक हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन द्वारा आत्मा के ईश्वरत्व और उसके पूर्ण व्यक्तित्व की पुष्टि पर ध्यान दिया है। इस समय, हम हमारे तीसरे मुख्य शीर्षक - वह कार्य जो पवित्र आत्मा ने पूरे इतिहस में किया है और निरंतर कर रहा है - को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

कार्य

> आत्मा के कार्य की गहन समझ रखने का एक लाभ यह जानना है कि परमेश्वर हमारे अन्दर बहुत ही व्यक्तिगत रूप में कार्य करता है। वह बटन नहीं दबाता है। वह हमारे पास आता है और बहुत ही व्यक्तिगत रूप से अन्तर्क्रिया करता है। अत: वास्तव में आत्मा हमारे अन्दर वास करता है। वह हमारे साथ हमारे लिए प्रार्थना करता है। वह हमें वरदान और पवित्रता प्रदान करता है, और वह हमारे साथ अनेक रूपों में सम्मिलित हो जाता है। वास्तव में, हमारे जीवन के प्रत्येक चरण में, वह हमें मसीही सद्गुणों के वरदान देता है, जैसे कि पौलुस गलातियों में कहता है। वह कलीसिया में सेवा के लिए अनेक वरदान देता है, और यह सब हमारे अन्दर आत्मा के माध्यम से परमेश्वर का कार्य है।
>
> डॉ. जॉन फ्रेम

यद्यपि प्रेरितों का विश्वास-कथन स्पष्ट रूप से आत्मा के कार्य के विषय में वर्णन नहीं करता है, परन्तु "मैं पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूँ" की पुष्टि करने के द्वारा विश्वास-कथन ने मूल रूप से आत्मा के कार्य की कई धारणाओं को लागू किया है।

आत्मा के कार्य का वर्णन करने के कई रूप हैं, परन्तु हम इसके केवल चार पहलुओं पर चर्चा करेंगे। पहला, हम उसकी सृजनात्मक शक्ति पर ध्यान देंगे। दूसरा, हम उसके पवित्र करने के कार्य पर को देखेंगे। तीसरा, हम उसके अनुग्रह के प्रबंधन के बारे में बात करेंगे। और चौथा, हम उस प्रकाशन का वर्णन करेंगे जो वह प्रदान करता है। आइए, उसकी सृजनात्मक शक्ति के साथ आरम्भ करें।

सृजनात्मक शक्ति

"सृजनात्मक शक्ति" से हमारा अर्थ पवित्र आत्मा की नई वस्तुओं की रचना करने की क्षमता, और जो कुछ रचा गया है उस पर शासन करने और बदलने की क्षमता है।

> जब आप बाइबल के पहले अध्याय, उत्पत्ति अध्याय 1, को पढ़ते हैं, आत्मा - पवित्र आत्मा - पानी के ऊपर मंडरा रहा है। जब आप कुलुस्सियों अध्याय 1 की ओर मुड़ते हैं तो हम पाते हैं कि मसीह सृष्टिकर्ता है, और वह पवित्र आत्मा के द्वारा रचना करता है। आत्मा पुन: रचना करने में भी सम्मिलित है। पुन: रचना करने का अर्थ वही है जो हृदयपरिवर्तन के विषय में हम सोच सकते हैं। यह आत्मा ही है जो नया करता है। जब तक कोई आत्मा के द्वारा जन्म न ले, तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। परन्तु आत्मा हमें व्यक्तिगत रूप से नया करने में ही कार्यरत् नहीं है, परन्तु ब्रह्मांड को नया करने में भी कार्यरत् है। अत: पौलुस रोमियों 8 में कहता है कि सृष्टि स्वयं भी प्रसवपीड़ा में कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है और सब वस्तुओं के नया होने की प्रतीक्षा कर रही है, जो पवित्र आत्मा का कार्य है।
>
> डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थॉमस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति के बारे में हमारी चर्चा उसकी गतिविधि के तीन भिन्न स्तरों पर ध्यान देगी। पहला, हम प्राकृतिक जगत में उसकी सृजनात्मक शक्तियों के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम उन आत्मिक वरदानों पर ध्यान देंगे जो वह कलीसिया को प्रदान करता है। और तीसरा, हम हमारी मानवीय आत्माओं और हृदयों के व्यक्तिगत नवीनीकरण में उसकी भूमिका पर ध्यान देंगे। तो आइए हम इस बात के साथ आरम्भ करें कि किस प्रकार प्राकृतिक जगत में उसकी सृजनात्मक शक्ति प्रदर्शित होती है।

प्राकृतिक जगत

प्राकृतिक जगत में पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति को पहले बाइबल के आरम्भिक पदों में देखा जा सकता है। इस अध्याय के प्रारम्भ में हमने उत्पत्ति अध्याय 1 के सृष्टि की रचना के लेख में आत्मा की भूमिका को देखा था, यह देखते हुए कि उसने शून्य से जगत की रचना करने में उसने ईश्वरीय सर्वसामर्थ्य का प्रयोग किया। हम इसी प्रकार के एक विचार को भजन 104:30 में देख सकते हैं, जहां भजनकार ने आत्मा को आरंभिक सृष्टि की रचना के सप्ताह के दौरान ही नहीं बल्कि दिन-प्रतिदिन पृथ्वी और उसके सब प्राणियों की रचना करने हेतु भेजने प्रशंसा की। भजन 33:6 इस विचार को बताता है और अय्यूब 33:4 इसे विशेष रूप से मानवजाति की ओर बढ़ाता है।

एक उदाहरण के रूप में, भजन 104:30 के शब्दों को सुनें:

> फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है। (भजन 104:30)

इस पद में भजनकार सम्पूर्ण सृष्टि की जिस प्रकार रचना हुई है, उसके प्रति अपनी समझ को व्यक्त करता है। और उसने इस सब कुछ को परमेश्वर के आत्मा, पवित्र आत्मा के साथ जोड़ा है।

प्राकृतिक जगत में पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति को पवित्रशास्त्र में उसकी शक्ति से किए गए चमत्कारों में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, पुराने नियम के निर्गमन 17:6 में उसने मूसा को चट्टान से पानी निकालने में योग्य बनाया। और 1राजा 17 में विधवा के आटे और दाल को बढ़ाया।

नए नियम में, मत्ती अध्याय 14 में उसने पांच हजार लोगों को और मत्ती अध्याय 15 में चार हजार लोगों को भोजन करवाने हेतु यीशु को भोजन को बढ़ाने में सक्षम बनाया। उसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया, जैसा कि हम रोमियों 8:11 में पढ़ते हैं। और उसने पौलुस के सभी चमत्कारों एवं सेवकाई में सामर्थ्य प्रदान की, जैसा हम रोमियों 15:18-19 में पढ़ते हैं।

निसंदेह, उसका महानतम चमत्कार देहधारण था, जिसमें उसने कुंवारी मरियम को यीशु के साथ गर्भवती किया। लूका 1:35 में निहित यह चमत्कार प्रेरितों के विश्वास-कथन में स्पष्ट रूप से उल्लिखित पवित्र आत्मा का एकमात्र कार्य था।

आज भी, पवित्र आत्मा में रचना करने, नया करने और सृष्टि को उस अवस्था में लेकर आने जो परमेश्वर इसके लिए चाहता है, की नाटकीय शक्ति पाई जाती है।

वास्तव में, उसके द्वारा संसार का नवीनीकरण तब तक पूरा नहीं होगा जब तक मनुष्य-जाति के पाप में पतन के प्रभावों को पूरी तरह से उलट न दे। उत्पत्ति अध्याय 3 हमें बताता है कि जब आदम और हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष वाला प्रतिबंधित फल खाया, तो परमेश्वर ने उन्हें श्रापित किया। और क्योंकि मानव-जाति को सम्पूर्ण पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधियों के रूप में अधिकार दिया गया है, इसलिए आदम और हव्वा के श्राप ने सम्पूर्ण सृष्टि को प्रभावित किया, भूमि तक को भी।

उस समय से, पवित्र आत्मा संसार में इसे पुनरुस्थापित करने और इसकी अंतिम अवस्था में लाने के लिए कार्य कर रहा है। और परिणाम नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगा जिसे हम यशायाह 65:17 और 66:22; 2पतरस 3:13; एवं प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में पढ़ते हैं।

अब जब हमने प्राकृतिक जगत में पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति को देख लिया है, तो हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि वह कलीसिया को आत्मिक वरदान प्रदान करने के लिए अपनी सृजनात्मक शक्ति का प्रयोग किस प्रकार करता है।

आत्मिक वरदान

जब हम आत्मिक वरदानों की बात करते हैं तो हमारे मन में-

> अप्राकृतिक उद्‌गम की वे क्षमताएं होती हैं जो पवित्र आत्मा कलीसिया के निर्माण के उद्देश्य के लिए लोगों को प्रदान करता है।

आत्मा उन लोगों को नई क्षमताएं प्रदान करने के द्वारा या पहले से पाई जाने वालीं क्षमताओं को ग्रहण करने वाले व्यक्ति की स्वाभाविक प्रतिभाओं या अनुभव से भी अधिक बढ़ाने के द्वारा इन वरदानों की रचना करता है जिनके पास ये नहीं थे।

> नए नियम में आत्मिक वरदान अप्राकृतिक रूप से दी गई विशेष विलक्षण क्षमताएं हैं। मैं सोचता हूँ कि इस बात पर बल देना महत्वपूर्ण है कि वे प्रतिभाओं से बढ़कर हैं। वे अप्राकृतिक रूप से हर विश्वासी को दी गई हैं। प्रत्येक विश्वासी में आत्मिक वरदान या संभवतः अनेक आत्मिक वरदान पाए जाते हैं।
>
> डॉ. मार्क स्ट्राँस

प्रारंभिक कलीसिया में पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए वरदानों के प्रकारों की सूचियां रोमियों अध्याय 12, 1कुरिन्थियों अध्याय 12, और इफिसियों अध्याय 4 जैसे स्थानों में पाई जा सकती हैं। इनमें से कुछ वरदान प्राकृतिक प्रतिभाओं या सामान्य मानवीय क्षमताओं जैसे लगते हैं। ये वे क्षमताएं हैं जो किसी हद तक कलीसिया से बाहर के लोगों में भी पाई जाती हैं, केवल इसलिए कि उन्हें परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है- ऐसे वरदान जैसे बंद्धि, ज्ञान, सेवा, शिक्षण, प्रोत्साहन, उदारता, अगुवाईपन और दया। परन्तु अन्य आत्मिक वरदानों में स्पष्टतः प्रत्यक्ष अप्राकृतिक उद्‌गम पाया जाता है, जैसे चंगाई और चमत्कारी शक्तियां। और कुछ ऐसे वरदान भी हैं जो प्राकृतिक और अप्राकृतिक के बीच सांतत्यक पर कहीं पड़े रहते हैं, जैसे भविष्यवाणी, अन्य भाषाओं में बोलना और आत्माओं को पहचानना।

अब, सभी मसीही सहमत होते हैं कि पवित्र आत्मा कलीसिया को अप्राकृतिक वरदान प्रदान करता है। परन्तु इस सामान्य सहमति में अनेक छोटे-मोटे दृष्टिकोण पाए जाते हैं जो एक-दूसरे से भिन्न प्रतीत होते हैं। कुछ कलीसियाएं अवसानवादी दावे को मानती हैं, यह विश्वास करते हुए कि आधुनिक युग में पवित्र आत्मा केवल वही वरदान प्रदान करता है जो प्राकृतिक प्रतिभाओं जैसे लगते हों। चमत्कारी वरदानों का बंद हो गया माना जाता है, शायद प्रेरितिक युग के बाद या वचन का कैनन बंद हो जाने के साथ।

अन्य कलीसियाएं निरंतरवादी दावे को मानती हैं। वे मानती हैं कि पवित्र आत्मा आज भी वे सभी वरदान प्रदान करता है जो नए नियम में पाए जाते हैं। इस समूह में इस बात पर अनेक दृष्टिकोण पाए जाते हैं कि कौनसे वरदान मसीही व्यक्ति प्राप्त कर सकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इन दोनों पक्षों के बीच में अनेक संतुलित दृष्टिकोण पाए जाते हैं। संतुलित कलीसियाएं विश्वास करती हैं कि पवित्र आत्मा आज भी जब चाहे तब चमत्कारी वरदान प्रदान कर सकता है। परन्तु वे इस बात पर बल नहीं देते कि आत्मा को सदैव हर प्रकार का वरदान कलीसिया को देना जरुरी है। ये कलीसियाएं पवित्र आत्मा के किसी भी रूप में और किसी भी समय में कार्य करने की स्वतंत्रता पर बल देती हैं।

परन्तु एक बात जो इन सभी समूहों में पाई जाती है वह यह धारणा है कि पवित्र आत्मा कलीसिया के लाभ के लिए अपने लोगों को कम से कम कुछ वरदान तो देता ही है। आत्मिक वरदान परमेश्वर की सामर्थ्य हैं, और उनका प्रयोग उसके लोगों के लिए सम्पूर्ण रीति से होना चाहिए। उन्हें व्यक्तिगत अभिलाषाओं की पूर्ति या व्यक्तिगत आत्मिक जीवन को बढ़ाने के लिए नहीं दिया गया है। इसकी अपेक्षा उन्हें सेवकाई के लिए कलीसिया को सामर्थी बनाने और मसीह में परिपक्व बनने के लिए दिया गया है। हम इस बात को रोमियों 12:4-5, 1कुरिन्थियों 12:7 और इफिसियों 4:7-16 में देखते हैं। एक उदाहरण के रूप में 1कुरिन्थियों 12:7 में पौलुस ने जो लिखा है उसे सुनें:

> सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। **(1कुरिन्थियों 12:7)**

जिस प्रकार पौलुस ने यहां दर्शाया है, आत्मिक वरदान कलीसिया के लिए दिए जाते हैं। वरदान-प्राप्त लोग उनके अपने वरदानों से भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु वरदान का मुख्य लक्ष्य और केन्द्र कलीसिया को लाभ प्रदान करना है। वे सामर्थ्य के सृजनात्मक कार्य हैं जिन्हें पवित्र आत्मा अपनी सम्पूर्ण कलीसिया के विकास के लिए प्रयोग करता है।

> आत्मिक वरदानों के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम जानते हैं वह यह है कि उनको विकसित किया जाना चाहिए, खोजा जाना चाहिए, और कलीसिया, अर्थात् मसीह की देह, में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। आत्मिक वरदान व्यक्ति विशेष को इसलिए नहीं दिए जाते कि वह आनन्द करे और अकेला उनसे लाभ प्राप्त करे। उन्हें लोगों के समूह, विश्वासियों के समूह, अर्थात् यीशु मसीह की कलीसिया के निर्माण के लिए दिए जाते हैं।
>
> डॉ. रियाड कासिस, अनुवाद

> आत्मा के द्वारा हमें दिए गए आत्मिक वरदान कलीसिया की उन्नति, कलीसिया के निर्माण, मसीही सेवकाई करने, एक-दूसरे को प्रोत्साहन देने और महान् आज्ञा को पूरा करने के लिए हैं। हमारे समय में जो मुख्य महत्व हम देते हैं, विशेषकर अन्य भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने के करिश्माई विषय, वास्तव में उन्हें पवित्रशास्त्र में हम कम महत्व के रूप में पाते हैं। हम उस प्रकार से आत्मिक वरदानों पर ध्यान देना चाहते हैं, जैसे नया नियम देता है- जो हमें राहत देता है, जो हमें दिखाता है कि नई वाचा का युग प्रारम्भ हो चुका है, हमारे अन्दर और सामूहिक रूप से इसके समुदाय में आत्मा का व्यक्तिगत कार्य, जो संसार में व्यक्तिगत एवं सांसारिक रूप में सेवकाई का कार्य करता है। यह महत्व है जिस पर हमें वास्तव में ध्यान देना है और जब हम इस संसार में रहते हैं तो व्यक्तिगत एवं कलीसिया के सामूहिक जीवन में उन्हें कार्यरत् होते देखना है।
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लुम

पवित्र आत्मा की इस समझ के साथ कि वह किस प्रकार प्राकृतिक संसार में और कलीसिया को आत्मिक वरदान प्रदान करने में अपनी सृजनात्मक शक्ति का प्रयोग करता है, आइए अब देखें कि किस प्रकार उसकी सामर्थ्य प्रत्येक विश्वासी की आत्मा और उसके हृदय के व्यक्तिगत नवीनीकरण में प्रकट होती है।

व्यक्तिगत नवीनीकरण

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि मनुष्य आत्मिक मृत्यु की दशा में जन्म लेते हैं। जैसे रोमियों 5:12-19 दर्शाता है, हम आदम के पाप के दोषी हैं, और उसके फलस्वरूप हम मृत्यु के अधीन हैं। इसलिए, इस दुर्दशा से हमें बचाने के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वर के समक्ष हमारी आत्माओं को जीवित करने के द्वारा हमारे अन्दर नए जीवन की रचना करता है। बाइबल इस नए जीवन के बारे में नया करने और नया जन्म लेने के रूप में बात करती है। इस नए जन्म पाने को यूहन्ना 3:3-8; तीतुस 3:5; 1यूहन्ना 5:1-18 एवं कई अन्य स्थानों में पढ़ते हैं। एक उदाहरण के तौर पर, तीतुस 3:5 में पौलुस के शब्दों को सुनें:

> नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा उसने हमारा उद्धार किया। (तीतुस 3:5)

नए हो जाने के पश्चात्, पवित्र आत्मा हमारे विचारों, भावनाओं और क्रियाओं को बदलने के लिए हमारे अन्दर कार्य करता रहता है। नया नियम इस बारे में रोमियों 8:1-16, 1कुरिन्थियों 12:3, गलातियों 5:16-25 और फिलिप्पियों 2:13 में पढ़ते हैं। शायद पवित्र आत्मा की परिवर्तनकारी सामर्थ्य के बारे में सबसे प्रसिद्ध चर्चा उस फल के विषय में पौलुस का वर्णन है जो पवित्र आत्मा विश्वासियों के जीवन उत्पन्न करता है। सुनें पौलुस ने गलातियों 5:22-23 में क्या लिखा है:

> आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं। (गलातियों 5:22-23)

हमारे चरित्र में ये सब परिवर्तन पवित्र आत्मा की सक्रिय, सृजनात्मक शक्ति का परिणाम होते हैं, जब वह हमें यीशु मसीह के स्वरूप में ढ़ालता है।

और निसंदेह, अंतिम दिन, पवित्र आत्मा अपनी सृजनात्मक शक्ति का प्रयोग सभी विश्वासयोग्य मसीहियों की शारीरिक देह को पुनर्जीवित करने में करेगा और हमें जैसी यीशु के पास है वैसी सिद्ध, अनश्वर देह प्रदान करेगा। सुनें इसके बारे में पौलुस ने रोमियों 8:23 में क्या कहा है:

> हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। (रोमियों 8:23)

जब पौलुस ने कहा कि मसीह के अनुयायियों के पास आत्मा के पहले फल हैं, तो उसने पुराने नियम की उस प्रक्रिया से अपनी भाषा-शैली को लिया जिसमें वर्षभर की सम्पूर्ण फसल के प्रतिनिधि के रूप में पहली फसल से भेंटें लाई जाती थीं। उसी प्रकार से विश्वासियों में पवित्र आत्मा का वर्तमान कार्य आने वाली उस महान् बात के पहले फल हैं। पवित्र आत्मा का कार्य तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक वह हमारे श्राप और नश्वरता को दूर करके और पापरहित पूर्व अवस्था में पुनरुथापित करके, पूर्ण रूप से हमारी पुन: रचना न कर दे। अब तक, पवित्र आत्मा ने हमारी आत्मा को नया जीवन दिया है। परन्तु अंत में वह हमारी देहों की भी पुन: रचना करेगा।

अब जब हमने पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति के कार्यों को देख लिया है, तो अब हमें पवित्रीकरण के उसके कार्य की ओर ध्यान देना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पवित्रीकरण

जब हम आत्मा के पवित्रीकरण के कार्य के बारे में बात करते हैं, तो हम लोगों और वस्तुओं को पवित्र बनाने के कार्य के बारे में बात कर रहे हैं। यही वह कार्य है जो आत्मा लोगों और वस्तुओं को परमेश्वर के कार्य के लिए अलग करने, उनको शुद्ध करने, और उसकी अनावृत महिमा के निकट आने के लिए उन्हें उपयुक्त बनाने में करता है। कई रूपों में, यह विचार नवीनीकरण के तथ्य से संबंधित है जिसके बारे में हमने इस अध्याय के पिछले भाग में देखा था।

बाइबल प्राय: कहती है कि कलीसिया पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सेवकाई के द्वारा पवित्र होती है या की जाती है। हम इस विचार को रोमियों 15:6; 1कुरिन्थियों 6:11, 2थिस्सलुनिकियों 2:13 और 1पतरस 1:1-2 जैसे स्थानों में पाते हैं। सुनें किस प्रकार पौलुस ने 1कुरिन्थियों 3:16-17 में पवित्र आत्मा के बारे में बात की है:

> क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?... परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो। (1कुरिन्थियों 3:16-17)

पुराने नियम में यहूदी मन्दिर परमेश्वर का पृथ्वी पर निवासस्थान था जहां उसकी विशेष उपस्थिति रहती थी। वह पृथ्वी पर उसका घर था, जैसे सुलेमान ने 2इतिहास 6:1 में इसके बारे में घोषणा की थी। परन्तु नए नियम में परमेश्वर मन्दिर में नहीं रहा। इसकी अपेक्षा, पवित्र आत्मा ने कलीसिया को नए मन्दिर के रूप में पवित्र किया। इसी विचार का उल्लेख स्पष्ट रूप से इफिसियों 2:22 में पाया जाता है और पवित्रशास्त्र के अन्य भागों में भी इसे देखा जा सकता है।

यह भी कहा जाता है कि पवित्र आत्मा विश्वासियों को भी उनके अन्दर निवास करने के द्वारा उन्हें पवित्र करता है। यह वही विचार है कि पवित्र आत्मा विश्वासियों के हृदयों में निवास करता है। इस वास करने का उल्लेख पवित्रशास्त्र के कई स्थानों में पया जाता है, जैसे रोमियों 8:9-16, 1कुरिन्थियों 6:19, 2तिमुथियुस 1:4 और याकूब 4:5।

> पवित्र आत्मा का वास करना विश्वासी के लिए आवश्यक वास्तविकता है। जब परमेश्वर भीतर आता है और मसीहियों को मसीह में नए प्राणी बनाता है, तो पवित्र आत्मा उन पर अधिकार ले लेता है। और यह बहुत आवश्यक है कि हम उस पर आश्रित रहें, उसकी हमारे अन्दर वास करने वाली शक्ति पर निर्भर रहें, नहीँ तो हम हमारे शरीर में ही जीवित रहेंगे। हमें आत्मा में जीने और शरीर में जीने के बीच अन्तर बता पाने में सक्षम होना है, क्योंकि आत्मा में जीना हमें उस प्रकार से मसीह को महिमा देने में सक्षम बनाता है जैसा वह हमसे चाहता है।
>
> डॉ. एरिक के. थोनेस

इस निवास करने के कई परिणाम होते हैं। कुछ की सूची बनाएं तो, यह हमें पाप से शुद्ध करता है, परमेश्वर के लिए हमें अलग करता है, और हम हमारे हृदयों और मनों में आत्मा के प्रभाव का आनन्द और लाभ प्राप्त करते हैं। सुनें किस प्रकार पौलुस ने इन बातों को 1कुरिन्थियों 6:9-11 में लिखा है:

> अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे... और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे। (1कुरिन्थियों 6:9-11)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पवित्र आत्मा के पवित्र करने के कार्य के माध्यम से विश्वासियों को शुद्ध किया गया है और परमेश्वर के लिए उन्हें अलग किया गया है, ताकि वे दुष्टों के साथ न गिने जाएँ।

क्या आपने कभी यह सोचा है कि यह कितनी विशेष बात है कि स्वयं परमेश्वर आपके भीतर वास करता है। ब्रह्मांड का रचियता आपसे इतना प्रेम करता है कि उसने शेष अनन्तता के लिए आपको अपने साथ जोड़ लिया है। आप उसके अनुमोदन के किनारे पर नहीं झूम रहे हो। आप उसके हृदय की गहराई में छिपे हुए हो। और यह रिश्ता आपको पाप के विरुद्ध मजबूत करता है। यह आपको परीक्षा में पड़ने के विरुद्ध संघर्ष करने में, और परमेश्वर को पसंद आने वाले तरीकों में जीने में सहायता करता है। और जब आप पाप करते हैं - तो यह कितने भी बुरे क्यों न हों - फिर भी आप परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य होते हैं। आप फिर भी उसके साथ संगति करने, उसकी आराधना करने, और निसंदेह उससे क्षमा मांगने और पाने के लिए उपयुक्त होते हैं।

अब तक हमने पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति और उसके पवित्रीकरण के कार्य पर चर्चा की है। अब हम उन भिन्न प्रकारों के बारे में बात करेंगे जिनके द्वारा वह ईश्वरीय अनुग्रह का संचालन करता है।

अनुग्रह

हम पवित्र आत्मा के द्वारा अनुग्रह के तीन प्रकारों के प्रबंधन की बात करेंगे: सामान्य अनुग्रह, वाचा का अनुग्रह और उद्धाररूपी अनुग्रह। आइए सामान्य अनुग्रह के साथ आरम्भ करें।

सामान्य अनुग्रह

सामान्य अनुग्रह वह धैर्य है जो परमेश्वर दिखाता है और वे उपकार हैं जो सम्पूर्ण मानव-जाति को वह प्रदान करता है। पवित्र आत्मा सभी लोगों को एक समान सामान्य अनुग्रह प्रदान नहीं करता है। इसकी अपेक्षा वह अपनी योजनाओं और अभिलाषाओं के अनुसार यहां-वहां प्रदान करता है।

उदाहरण के तौर पर, सामान्य अनुग्रह को इस प्रकार से देखा जाता है कि पवित्र आत्मा संसार में पाप को रोकता है। पतित अविश्वासी पाप के द्वारा नियंत्रित होते है, जैसा पौलुस ने रोमियों 8:1-8 में सिखाया था। वे स्वभाव से ही परमेश्वर के विरोधी होते हैं, और वे पाप से प्रेम करते हैं। परन्तु जिस प्रकार रोमियों अध्याय 7 और 8 में पौलुस ने सिखाया, पवित्र आत्मा संसार में पाप के विरुद्ध लड़ता है। यह उसी समान है जिस प्रकार वह विश्वासियों को नया करने के बाद उनमें कार्य करता है। यद्यपि वह अविश्वासियों को इतनी बड़ी आशीष नहीं देता है, परन्तु यह भी सत्य है कि वह उन्हें रोकता है ताकि वे उतना अधिक पाप न कर सकें जितना वे करने में सक्षम हैं।

सामान्य अनुग्रह का अन्य पहलू, जो संसार में प्राय: देखा जा सकता है, वह ज्ञान है जो अविश्वासी प्राप्त करते हैं, और उस ज्ञान के द्वारा जो अच्छे कार्य वे कर सकते हैं। अविश्वासी अनेक बहुमूल्य सत्यों को सीख सकते हैं जिनका प्रयोग वे कलीसिया और इसके विश्वासियों, और उनके साथ-साथ शेष मानव-जाति, को लाभ पहुंचाने में करते हैं। और जब कभी भी कोई किसी उपयोगी बात को पाता है, तो वह ज्ञान पवित्र आत्मा की ओर से अनुग्रहकारी वरदान होता है।

जॉन काल्विन, प्रसिद्ध प्रोटेस्टेंट सुधारवादी जिसका जीवनकाल 1509 से 1564 ईस्वी तक था, ने अपनी कृति इंस्टीटयूट ऑफ ख्रिस्टियन रिलिजियन की दूसरी पुस्तक के दूसरे अध्याय के 15वें और 16वें खण्डों में पवित्र आत्मा के ज्ञान के सामान्य वरदानों का वर्णन किया था। सुनें उसने वहां क्या लिखा था:

> जब कभी भी हम इन विषयों को सांसारिक लेखकों की कृतियों में पाते हैं, तो सत्य की प्रशंसनीय ज्योति जो उनमें चमकती है हमें यह सिखाए कि मनुष्य का मन, अपनी सम्पूर्णता से पतित एवं भटका होने पर भी, परमेश्वर के उत्कृष्ट वरदानों

> से ढ़का और विभूषित है। यदि हम परमेश्वर के आत्मा को सत्य के सोते के रूप में मानते हैं, तो जब तक हम परमेश्वर के आत्मा का अनादर करना न चाहें, तब तक न तो स्वयं सत्य को ठुकराएंगे, और न ही उसको तुच्छ जानेंगे जहां भी यह प्रकट हो... परन्तु यदि परमेश्वर ने चाहा है कि हम भौतिकशास्त्र, भाषाशास्त्र, गणित और अन्य संकायों में परमेश्वर को न जानने वाले लोगों के कार्यों से सहायता प्राप्त करें, तो हमें उनके सहयोग को प्राप्त कर लेना चाहिए।

वाचा का अनुग्रह

पवित्रशास्त्र के कई स्थानों में हम पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किए गए दूसरे प्रकार के अनुग्रह को पाते हैं जिसे कभी-कभी वाचा का अनुग्रह कहा जाता है।

वाचा का अनुग्रह परमेश्वर का वह धैर्य और वे उपकार हैं जो परमेश्वर उन सब को देता है जो उसकी वाचा के लोगों का हिस्सा होते हैं, चाहे वे सच्चे विश्वासी न भी हों। पुराने नियम में इस्राएल परमेश्वर के वाचा के लोग थे क्योंकि पूरा राष्ट्र परमेश्वर की अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बांधी गई विशेष वाचाओं के अधीन था। नए नियम में परमेश्वर की वाचा के लोग दृष्टिगोचर कलीसिया है, जो कलीसिया से जुड़े हुए लोग हैं, चाहे वे सच्चे विश्वासी न भी हों। परमेश्वर का वाचा का अनुग्रह सामान्य अनुग्रह से भी अधिक भरपूर और धैर्यवान होता है।

उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर प्राचीन इस्राएल के प्रति बहुत ही धैर्यवान और दयालु था, चाहे इस्राएल उसके प्रति प्राय अविश्वासयोग्य रहा एवं उसके विरुद्ध बहुत पाप किए। इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के कारण, उसने उन्हें सम्पूर्ण राष्ट्र के रूप में नाश नहीं किया, बल्कि सदैव विश्वासयोग्य बाकी बचे लोगों को बनाए रखा। पौलुस ने इसके बारे में रोमियों 11: 1-5 में स्पष्ट रूप से बात की है। इससे बढ़कर, परमेश्वर की वाचा के कारण प्राचीन इस्राएल के अविश्वासियों ने उसकी आशीषें प्राप्त की थीं। शायद इसका सबसे उचित उदाहरण मिस्र से निर्गमन है। सुनें मूसा ने निर्गमन 2:23-25 में क्या लिखा था:

> इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी-लम्बी साँस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुँची। परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बाँधी थी, स्मरण किया। और परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया। (निर्गमन 2:23-25)

ध्यान दें कि परमेश्वर इस्राएल के बारे में क्यों चिंतित था और उसे क्यों बचाया। यह इसलिए नहीं कि वे उसके प्रति विश्वासयोग्य थे, परन्तु इसलिए कि वे उस वाचा में सम्मिलित थे जो उसने उनके पूर्वजों अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बांधी थी।

वही बात आज कलीसिया में भी लागू होती है। उदाहरण के तौर पर, प्रत्येक वह व्यक्ति जो कलीसिया का भाग है उसके समक्ष नियमित रूप से सुसमाचार प्रस्तुत किया जाता है और पश्चाताप करने एवं उद्धार पाने का अवसर प्रदान किया जाता है। और वे उन आशीषों में भी सहभागी होते हैं जो परमेश्वर सम्पूर्ण कलीसिया को प्रदान करता है। वास्तव में, कलीसिया में अविश्वासी कलीसिया के आत्मिक वरदानों से भी लाभ प्राप्त करते हैं, जैसा हम इब्रानियों 6:4-6 में पढ़ते हैं। इसीलिए इब्रानियों 10:29 कहता है कि कलीसिया के अविश्वासी अपनी अविश्वासयोग्यता से अनुग्रह के आत्मा का अपमान करते हैं।

> जब हम कलीसिया में जाते हैं, तो वहां उद्धार पाए और उद्धार न पाए दोनों प्रकार के लोग होते हैं। उद्धार न पाए लोग, मैं कहूंगा, मसीहियों की उपस्थिति में रहने से लाभ प्राप्त करते हैं। यह एक अच्छी बात है। परमेश्वर उससे क्या करेगा, हम हमेशा

कह नहीं सकते। परन्तु वहां रहना एक अच्छी बात है। जॉन काल्विन ने सामान्य अनुग्रह के बारे में बात की है; जॉन वैस्ली ने परमेश्वर के पूर्ववर्ति अनुग्रह के बारे में बात की- इसी प्रकार अनुग्रह एक व्यक्ति के जीवन में कार्य करता है इससे पहले कि वे चेतनापूर्वक यीशु मसीह में विश्वास को जाहिर करें। इसलिए मैं सोचता हूँ कि वह अनुग्रह शायद दो प्रकार से कार्य करता है। पहला यह कि हमें हमारे पाप का बोध हो जाता है। हम यह जान लेते हैं कि पाप वास्तविक है, कि पाप हमें क्षति पहुंचाता है, परन्तु यह परमेश्वर के हृदय पर भी आघात करता है। यह देखने के लिए आपको अनुग्रह के स्थान पर होना जरुरी है। और फिर, जब पाप का बोध हमारे भीतर होना शुरु हो जाता है, तब हम आशस्त हो जाते हैं, जैसे कुछ धर्मविज्ञानी कहते हैं,, कि जीने का एक और रास्ता है, कि जीने का एक बेहतर मार्ग भी है। और इसलिए मेरा अनुमान है, खासकर उद्धार न पाए व्यक्ति के लिए, कि यह उन श्रेष्ठ बिन्दुओं से जीवन को देखने के अवसर प्राप्त करना है, यह विश्वास करते हुए कि जब वे ऐसा करेंगे तो परमेश्वर उनके जीवनों में कार्य करेगा।

डॉ. स्टीव हार्पर

यह उन्हें परमेश्वर के विधान के द्वारा ऐसे संदर्भ में रखता है जिसमें वे सुसमाचार सुन सकते हैं, जिसमें वे सुसमाचार को क्रियान्वित होता देख सकते हैं, जिसमें वे लोगों के समूह की संगति में देख सकते हैं कि यीशु कैसा दिखता है। और इसलिए, परमेश्वर की सर्वोच्चता में, शायद यह किसी को उद्धार पाए बिना कलीसिया के जीवन में लाने का साधन है ताकि वे सुसमाचार का प्रत्युत्तर दे सकें।

डॉ. स्टीव ब्लैकमोर

उद्धाररूपी अनुग्रह

अंत में, पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किया जाने वाला तीसरे प्रकार का अनुग्रह वह है जिसे कई धर्मविज्ञानी उद्धाररूपी अनुग्रह कहते हैं।

उद्धाररुपी अनुग्रह मसीह के सिद्ध जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और पुनर्आगमन के अनन्त उपकारों को उन लोगों पर लागू करना है जो प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में उसे ग्रहण करते हैं। प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा से उद्धाररुपी अनुग्रह प्राप्त करता है।

पवित्र आत्मा द्वारा उद्धाररुपी अनुग्रह देने के फलस्वरूप जो आशीषें हमें मिलती हैं, वे यीशु के कार्य के आधार पर हमारे लिए पहले से ही सुरक्षित रखे हुए हैं। परन्तु हमें तब तक उनके लाभों को प्राप्त नहीं कर सकते जब तक पवित्र आत्मा उनको हम पर लागू नहीं कर देता। इन आशीषों में सबसे स्पष्ट वे हैं जैसे नया कर देना, जिनके द्वारा पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं को नया जीवन प्रदान करता है, ताकि हम नया जन्म प्राप्त करें। हम इसे यूहन्ना 3:5-8, रोमियों 8::2-11 और तीतुस 3:5 में पढ़ते हैं। पश्चाताप, पापों की क्षमा, और धर्मी ठहराना भी उद्धाररुपी अनुग्रह हैं जो पवित्र आत्मा हम पर लागू करता है, जिसे हम जकर्याह 2:10, 1कुरिन्थियों 6:11 और तीतुस 3:5-8 में पाते हैं। नया नियम उद्धार को पवित्र आत्मा द्वारा हमें सम्पूर्ण बनाने के रूप में बताता है, जिसे हम 2थिस्सलुनिकियों 2:13 और तीतुस 3:5 में देखते हैं।

जब मसीही व्यक्तिगत उद्धार के बारे में बात करते हैं, तो हम यीशु मसीह और उसके कार्यों पर ध्यान देते हैं। और निसंदेह यह अच्छा भी है। परन्तु पवित्र आत्मा की भूमिका को पहचानना भी महत्वपूर्ण है।

> एक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा जो करता है उसकी समझ सम्पूर्ण मसीही जीवन की रचना करती है। पवित्र आत्मा हमें प्रेरित करता है, और इस बात को महसूस करने की कुंजी है कि मसीह के लिए जीने की अभिलाषा और शक्ति पवित्र आत्मा से आती है। यह उस असीम ज्ञान का हिस्सा है जो पवित्र आत्मा हमारे लिए करता है, कि वह वही है जो हमें परमेश्वर के वचन को समझने में हमें प्रज्जवलित करता है। वह वही है जो हमें परमेश्वर की बातों की भूख प्रदान करता है, कि हम परमेश्वर के लिए और परमेश्वर की बातों के लिए भूखे रहें, कि हम परमेश्वर के लोगों से प्रेम करें, कि हम परमेश्वर की सेवा करना चाहें। यह लोगों पर से काफी दबाव हटा देता है। यह इस प्रकार के विचारों वाले व्यक्ति से दबाव को हटा देता है: "सब मेरे कंधों पर ही है, परमेश्वर ने मुझे बताया है कि क्या करना है, अब यह मुझे ही करना है, आज्ञा मानना मुझ पर ही निर्भर करता है।" हाँ, हम पर जिम्मेवारियां होती हैं। हमारे स्थान पर परमेश्वर आज्ञा नहीं मानता है, परन्तु हम यह स्वीकार करते हैं कि वह हमें अभिलाषा और शक्ति एवं विचार देता है। यह सब उसी की महिमा के लिए है।
>
> डॉ. डोनाल्ड विह्टनी

त्रिएकता के अन्य व्यक्तित्वों से बढ़कर, पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में सक्रिय होता है और यह निश्चित करता है कि हम क्षमा, आनन्द, भलाई, सामर्थ्य, शांति और उद्धार की अन्य सभी आशीषें प्राप्त करें। इसलिए, यदि हम ये सब प्रचुरता में पाना चाहते हैं, तो हमें उसके उद्धाररुपी अनुग्रह के लिए उससे निवेदन करना चाहिए। और इससे बढ़कर, हमें उसकी विश्वासयोग्यता और दया के लिए आत्मा का सम्मान करना चाहिए। जो उद्धाररुपी अनुग्रह वह देता है वह उसे हमारे आभार, हमारी प्रशंसा, हमारी आराधना और हमारे प्रेम के योग्य से भी बढ़कर बना देता है।

अब जब हमने पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति, पवित्रीकरण और अनुग्रह के कार्यों की खोज कर ली है, तो हम प्रकाशन के उसके कार्यों को देखने के लिए तैयार हैं।

प्रकाशन

पवित्र आत्मा को सामान्यत: त्रिएकता के ऐसे व्यक्तित्व के रूप में पहचाना जाता है जो प्रकाशन, गवाही और ज्ञान का दूत है। हम इसे यूहन्ना 14:26; 1कुरिन्थियों 2:4 और 10; इफिसियों 3:5 और अन्य स्थानों में देखते हैं। वास्तव में, आत्मा और प्रकाशन का सम्बंध इतना गहरा है कि पवित्र आत्मा को यूहन्ना 14:17, 15:26, और 16:13 में सत्य का आत्मा कहा जाता है। और 1यूहन्ना 5:7 में यूहन्ना यहां तक कहता है कि-

> आत्मा सत्य है। (1यूहन्ना 5:7)

इसी समान, पौलुस इफिसियों 1:17 में आत्मा की भूमिका को यह कहते हुए दर्शाता है कि वह-

> ज्ञान और प्रकाश का आत्मा है। (इफिसियों 1:17)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम आत्मा के प्रकाशन के कार्य के तीन पहलुओं के बारे में बात करेंगे। पहला, हम सामान्य प्रकाशन के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम विशेष प्रकाशन पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम प्रज्जवलित करने और आंतरिक अगुवाई पर ध्यान देंगे। आइए, पहले सामान्य प्रकाशन पर चर्चा करें।

सामान्य प्रकाशन

सम्पूर्ण मानव-जाति के समक्ष अपने अस्तित्व, प्रकृति, उपस्थिति, क्रियाओं और इच्छा को प्रकट करने के लिए परमेश्वर द्वारा प्राकृतिक जगत और इसकी क्रियाओं के प्रयोग करने को सामान्य प्रकाशन कहा जाता है।

पवित्रशास्त्र सामान्य प्रकाशन के बारे में कई स्थानों पर बात करता है, जैसे भजन 8 और 19 एवं रोमियों अध्याय 1 और 2। उदाहरण के तौर पर, रोमियों 1:20 सामान्य प्रकाशन के बारे में यह कहता है:

> उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से ही उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं। (रोमियों 1:20)

पवित्रशास्त्र प्राय: कहता है कि सामान्य प्रकाशन को प्रकृति में पवित्र आत्मा की सृजनात्मक शक्ति के द्वारा प्रदान किया जाता है - सृष्टि के कार्य में और रची गई वस्तुओं को बनाए रखने में। ये सभी कार्य आत्मा की इच्छा और चरित्र से बहते हैं। इसलिए, जब हम उनमें उसके हाथ को देखते हैं, तो वे उसकी प्रकृति और अभिप्रायों को सिखाते हैं।

> सामान्य प्रकाशन में पवित्र आत्मा का कार्य बहुत ही अहम और महत्वपूर्ण है क्योंकि वह सृष्टि का दूत है। वह वही है जो परमेश्वर के नियमों- जिन्हें हम "प्राकृतिक नियम" भी कहते है- को बनाए रखने में भी शामिल होता है। और यह वह प्रकाशन है जो पवित्र आत्मा सब लोगों को बिना भेदभाव के देता है, जो निसंदेह उससे अलग है जिसे हम कभी-कभी "विशेष प्रकाशन" कहते हैं, जिसके द्वारा हम हमारे हृदयों में उसके आंतरिक कार्यों के द्वारा यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जान लेते हैं। परन्तु सामान्य प्रकाशन वह है जो परमेश्वर के सभी प्राणियों के लिए उपलब्ध रहता है।
>
> डॉ. साइमन विबर्ट

> परमेश्वर हमें बताता है कि आकाशमण्डल परमेश्वर की महिमा प्रकट करता है। अत: जहां कहीं भी हम हमारी आंखों को लगाते हैं, तो हम परमेश्वर की सामर्थ्य, उसकी बुद्धि, उसकी भलाई के प्रदर्शन को सृष्टि में चारों ओर देख सकते हैं। पवित्र आत्मा परमेश्वर के इन प्रकाशनों को लेता है और शक्तिशाली रूपों में हमारे पास लेकर आता है, इसलिए हमें हमारे सृष्टिकर्ता के साथ सही सम्बंध बनाना है।
>
> डॉ. एरिक के. थोनेस

विशेष प्रकाशन

संसार में सामान्य प्रकाशन प्रदान करने के अतिरिक्त, पवित्र आत्मा विशेष प्रकाशन भी प्रदान करता है, विशेषकर कलीसिया को।

मनुष्यजाति की सीमित संख्या के समक्ष अपने अस्तित्व, प्रकृति, उपस्थिति, कार्यों और इच्छा को प्रकट करने के लिए परमेश्वर के प्रत्यक्ष रूप से शामिल होने अथवा अपने संदेशवाहकों का इस्तेमाल करने को विशेष प्रकाशन कहते हैं।

पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र, भविष्यवाणियों, स्वप्नों, दर्शनों, स्वर्गदूतों और अन्य असाधारण माध्यमों के द्वारा विशेष प्रकाशन प्रदान किया है। विशेष प्रकाशन मुख्यत: विशेष लोगों या समूहों को दिया जाता है, विशेषकर उन्हें जो परमेश्वर के उद्धार की भेंट को स्वीकार करते हैं। पुराने नियम में, विशेष प्रकाशन अधिकांश अब्राहम और उसके वंशजों को दिया जाता था। और नए नियम में यह कलीसिया को दिया गया। आत्मिक वरदानों के समान, विशेष प्रकाशन परमेश्वर के सब लोगों के लाभ के लिए होता है, सबको विश्वास में लाने और बढ़ाने के लिए।

पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया सबसे महानतम प्रकाशन स्वयं यीशु मसीह का देहधारण था। इब्रानियों अध्याय 1 परमेश्वर के सभी प्रकाशनों में से हमारे प्रभु की सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन के रूप में प्रशंसा करता है। और आज भी पवित्र आत्मा प्रेरणाप्राप्त पवित्रशास्त्र के द्वारा निरंतर रूप से मसीह की ओर संकेत करता है, जिसमें सभी युगों से मसीह के शब्द पाए जाते हैं जो हमें उसके आधिकारिक नबियों और प्रेरितों से प्राप्त हुए हैं।

पवित्र आत्मा के पवित्रशास्त्र के लेखक होने का उल्लेख मत्ती 22:43; मरकुस 12:36; प्रेरितों के काम 1:16 और 4:25; 2तिमुथियुस 3:16-17 जैसे अनुच्छेदों में पाया जाता है। एक उदाहरण के रूप में सुनें पतरस ने 2पतरस 1:20-21 में क्या लिखा है:

> पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचार-धारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि भविष्यद्ववाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते हैं। (2पतरस 1:20-21)

प्रेरितों के युग से ही आत्मा अब नए शास्त्रों को प्रेरणा नहीं देता है। परन्तु जो विशेष प्रकाशन उसने पुराने और नए नियम में प्रदान किया है, वह हर युग में मसीहियों के समक्ष उसकी इच्छा को निरंतर प्रकाशित करता रहता है।

तीसरा, सामान्य प्रकाशन और विशेष प्रकाशन प्रदान करने के अतिरिक्त पवित्र आत्मा लोगों को प्रज्जवलित या प्रकाशमान करने तथा आंतरिक अगुवाई देने के माध्यम से भी कार्य करता है।

प्रज्जवलित करना और आंतरिक अगुवाई देना

> 2पतरस 1:21 में हम पढ़ते हैं कि पुराने नियम के नबियों ने पवित्र आत्मा से प्रेरणा प्राप्त करने के द्वारा परमेश्वर की ओर से बातें कीं, जिसका आशय है कि कलीसिया को दिया गया पवित्र आत्मा हमें यह समझने के लिए ज्योतिर्मय करेगा जिसकी प्रेरणा उसने नबियों को दी थी। कोई नया प्रकाशन नहीं है, परन्तु यदि हमें वर्तमान प्रकाशन को समझना है तो हमें परमेश्वर के आत्मा के द्वारा ज्योतिर्मय और शक्तिशाली बनना आवश्यक है।
>
> डॉ. नोक्स चैम्बलीन

प्रज्जवलित या प्रकाशमान होना ज्ञान या समझ का ईश्वरीय वरदान है जो मुख्य रूप से संज्ञानात्मक होता है, जैसे कि वह ज्ञान कि यीशु मसीहा है, जो पतरस ने मत्ती 16:17 में प्राप्त किया था।

और आंतरिक अगुवाई ज्ञान या समझ का वह ईश्वरीय ज्ञान है जो मुख्यत: भावनात्मक या बोधपूर्ण होता है। इसमें हमारा विवेक और वह भाव शामिल होता है जिसके द्वारा परमेश्वर किसी से कोई विशेष कार्य करवाता है।

प्रज्जवलित करना और आंतरिक अगुवाई बाइबल में सदैव एक-दूसरे से स्पष्टत: भिन्न प्रतीत नहीं होते हैं। प्राय:, पवित्रशास्त्र ऐसे रूपों में बात करता है जो समान रूप से दोनों पर लागू होते हैं। हम इस प्रकार के अनुच्छेद 1कुरिन्थियों 2:9-16; इफिसियों 1:17; कुलुस्सियों 1:9 और 1यूहन्ना 2:27 में पाते हैं। उदाहरण के तौर पर इफिसियों 1:17 में पौलुस ने इस प्रकार कहा:

> हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे। (इफिसियों 1:17)

यहां, पौलुस ने पवित्र आत्मा को "बुद्धि और प्रकाशन का आत्मा" कहा है। प्रज्जवलित करने और आंतरिक अगुवाई करने की श्रेणियों के सम्बंध में, हम शायद बुद्धि को आंतरिक अगुवाई और प्रकाशन को प्रज्जवलित करने के रूप में देखने को लालायित हो सकते हैं। और यही बात शायद पौलुस के मन में थी। दूसरी ओर, वह शायद उनके बीच स्पष्ट अंतर को दर्शाए बिना सामूहिक रूप से आत्मा के दोनों कार्यों को दर्शा रहा है।

> हम सबको आत्मा के प्रकाश की आवश्यकता है क्योंकि हम सब इसके बिना आत्मिक रूप से अंधे हैं। हम आत्मिक रूप से इस प्रकार से अंधे हैं जिस प्रकार से चमगादड़ शारीरिक रूप से अंधे होते हैं, मेरा मतलब है कि वे सूर्य की ओर देख नहीं सकते। इसलिए जब सूर्य चमक रहा होता है तो वे गुफाओं की छत से उलटे पांव लटके रहते हैं जहां वे दिन भर छिपे रहते हैं। वे तभी देख सकते हैं जब वे रात में बाहर निकलते हैं। हाँ, हम भी दिन में चमगादड़ों की अवस्था में रहते हैं। परमेश्वर की ज्योति चमक रही है, परन्तु पाप ने हमारी आत्मिक क्षमता में असंमजस डाल कर जो किया है, उसके द्वारा हम परमेश्वर की वास्तविकता और उसके वचन को समझ नहीं पाते हैं। हमें शायद यह धुंधली समझ हो कि परमेश्वर वहां है, परन्तु हम इस बात को समझना नहीं चाहते कि पवित्रशास्त्र की आज्ञाएं हमारे लिए हैं, पवित्रशास्त्र की प्रतिज्ञाएं हमारे लिए हैं। प्रभु यीशु की पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली प्रस्तुति उस पर भरोसा करने और नए जीवन में प्रवेश करने के लिए हमारे समक्ष प्रस्तुत हो रही है। नया नियम कहता है, मैं अब 2कुरिन्थियों अध्याय 4 से उद्धृत कर रहा हूँ, "परमेश्वर ही है जिसने कहा "अंधकार में से ज्योति चमके'" जो निसंदेह सृष्टि की रचना में पाया जाता है "और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।" यही आत्मा का प्रकाश है, और जब वह प्रकाश हमें दिया जाता है, तो हम मसीह को आत्मिक रूप से देखते हैं, हम उसकी वास्तविकता को देखते हैं, हम सुनते और महसूस करते हैं कि वह हमें अपने पास बुला रहा है।
>
> डॉ. जे. आई. पैकर

प्रज्जवलित करना और आंतरिक अगुवाई वे सामान्य साधन हैं जिन्हें पवित्र आत्मा अपने लोगों को उन सत्यों को सिखाने में प्रयोग करता है जो उसने प्रकाशित किए हैं। उसी के समान, कम से कम तीन कार्य हैं जो हमारे जीवनों में हम उसकी सेवकाई से लाभ प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं। पहला, हम स्वयं को बाइबल का अध्ययन करने के प्रति समर्पित कर सकते हैं, यह जानते हुए कि जब हम ऐसा करते

हैं तो पवित्र आत्मा प्राय: हमारी समझ को अगुवाई प्रदान करेगा। दूसरा, हम स्वयं को प्रार्थना के प्रति समर्पित कर सकते हैं, पवित्र आत्मा से निरंतर अगुवाई, बुद्धि, समझ और आज्ञा मानने की इच्छा मांगते हुए। और तीसरा, हम स्वयं को धर्मी और पवित्र जीवन जीने के प्रति लगा सकते हैं, उन सत्यों के अनुसार जीवन जीने के लिए दृढ़ निश्चय रखते हुए जो आत्मा हमें सिखाता है।

उपसंहार

प्रेरितों के विश्वास-कथन के इस अध्याय में हमने पवित्र आत्मा की धर्मशिक्षा पर ध्यान दिया है। हमने विश्वास-कथन और इसके बाइबल-आधार के सम्बंध में आत्मा के ईश्वरत्व पर चर्चा की है। हमने उसकी विशेषताओं के अनुसार और पिता एवं पुत्र के साथ उसके सम्बंध के प्रकाश में उसके व्यक्तित्व की खोज की है। और हमने उसकी सृजनात्मक शक्ति, पवित्रीकरण, अनुग्रह और प्रकाशन के कार्यों के बारे में बात भी की है।

पवित्र आत्मा की धर्मशिक्षा मसीहियों के लिए एक असीम सोता है। यह हमें त्रिएकता के तीसरे व्यक्तित्व के बारे में सिखाता है, जो हर समय सहायता के लिए हमारा निकटतम स्रोत है। वह हमें उसकी ओर संकेत करता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले मार्गों में जीने के लिए प्रेरित करने और शक्ति प्रदान करने के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी है। और यह हमें काफी आत्मविश्वास प्रदान करता है कि परमेश्वर सदैव इस संसार में गहन एवं व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित है, उन सबके लाभ के लिए सदैव कार्य करते हुए जो अपना भरोसा उस पर रखते हैं।